ट्रेड यूनियनें और सर्वहारा क्रांति

(पहली किस्त)

रूसी मजदूर आंदोलन के सबक

मजदूर वर्ग के बीच पार्टी के कामों का एक महत्वपूर्ण अंश ट्रेड–यूनियनों के बीच काम है। इसका कारण यह है कि मजदूरों का सबसे व्यापक संगठन ट्रेड–यूनियन ही है। इसमें पिछड़े से पिछड़े मजदूर आ सकते हैं। कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को ट्रेड यूनियनों में काम को किस नजरिये से करना होता है। इस पर अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में लम्बी बहस रही है और इन्हीं बहसों से ही ट्रेड यूनियनों के बीच क्रांतिकारी काम का बोधा और समझदारी निकली है।

जब से पहले इण्टरनेशनल में यह घोषित किया गया कि मजदूर वर्ग की मुक्ति केवल उनके ही हाथों से हो सकती है और कि मजदूर वर्ग को अपनी मुक्ति के लिए पहले शासक के बतौर अपने को स्थापित करना होगा, तब से मजदूर आंदोलन काफी सबक सीख चुका है। एक तरफ तो वह शासक वर्ग से स्वतंत्र एक राजनीतिक पार्टी के बतौर अपने को संगठित करने की ओर गया और दूसरी तरफ उसने ट्रेड यूनियन के इर्द–गिर्द व्यापक मजदूर आबादी को संगठित करने की कोशिश की।

इन्हीं दो तरह के कामों–कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण और व्यापक मजदूर आबादी का संगठन–को करते समय अतीत में संघर्ष हुए हैं और आज भी जारी हैं। दोनों तरह के कामों में कैसे तालमेल कायम किया जाय, इन्हीं सवालों पर क्रांतिकारी और सुधाारवादी या क्रांतिकारी व अतिवाम की टकराहट होती रही है। यदि कम्युनिस्ट पार्टी को गिराकर ट्रेड यूनियन के स्तर पर ले आया जाय तो यह क्रांति की पार्टी के बजाय एक सुधाारवादी पार्टी में बदल जायेगी और यदि व्यापक मजदूर आबादी को संगठित करने के बजाय सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी के तत्वों को शामिल किया जाय तो यह एक पंथ में तब्दील हो जायेगी। अलग–अलग समय में, अलग–अलग देशों में एक या दोनों भटकाव आते रहे हैं और आज भी आ रहे हैं।

हमारे समक्ष जो अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के अनुभव हैं उसमें सबसे ठीक तरीके से रूसी बोल्शेविक पार्टी ने इन सम्बंधाों को हल किया था। उन्होंने ट्रेड यूनियन आंदोलन और कम्युनिस्ट आंदोलन के बीच सम्बंधाों को सबसे सटीक तरीके से समझा, विजातीय प्रवृत्तियों के विरूद्व संघर्ष करके उन्हें पराजित किया और सही कम्युनिस्ट पार्टी के साथ–साथ व्यापक मजदूर आबादी को ट्रेड यूनियनों में क्रांति के लिए संगठित किया। बोल्शेविक पार्टी के अनुभवों की चर्चा करने से पहले हम ट्रेड यूनियनों के बारे में मार्क्स की बातों से शुरू करते हैं।

ट्रेड यूनियनों के बारे में मार्क्स :

प्रथम इण्टरनेशनल में मार्क्स द्वारा अस्थायी जनरल कौंसिल के डेलीगेटों के लिए दिये गये निर्देश में 'ट्रेड यूनियनें उनका अतीत, वर्तमान तथा भविष्य' शीर्षक में कहा गया है :

''(क) पूंजी संकेन्द्रित सामाजिक शक्ति है, जबकि मजदूर के पास केवल अपनी श्रम शक्ति होती है। इसलिए पूंजी तथा श्रम के बीच करार कभी बराबरी की शर्तों पर नहीं हो सकता, ऐसे समाज की दृष्टि से भी बराबर नहीं हो सकता जो अस्तित्व तथा श्रम के भौतिक साधानों को एक ओर तथा मौलिक उत्पादक शक्तियों को दूसरी ओर रखता है। मजदूरों की एक मात्र सामाजिक शक्ति उनकी तादाद है। परन्तु तादाद की शक्ति को उनकी पृथकता भंग कर देती है। मजदूरों की यह पृथकता ***उनके मध्य अपरिहार्य प्रतियोगिता*** द्वारा उत्पन्न होती तथा बरकरार रखी जाती है।

''ट्रेड यूनियनों का मूलतः आविर्भाव इस प्रतियोगिता को मिटाने या कम से कम इसे रोकने के लिए मजदूरों के ***स्वतः स्फूर्त*** प्रयत्नों से हुआ जिनका उद्देश्य करार की ऐसी शर्तें हासिल करना था जो उन्हें कम से कम मात्र दासों के स्तर से ऊपर उठा सकतीं। इसलिए ट्रेड यूनियनों का तात्कालिक लक्ष्य रोजमर्रा की जरूरतों तक, पूंजी के निरंतर आक्रमणों की राह में बाधाा डालने के प्रयत्नों तक, दूसरे शब्दों में मजदूरी और श्रम के समय सम्बंधाी प्रश्नों तक सीमित रहा। ट्रेड यूनियनों का यह क्रियाकलाप न्यायोचित ही नहीं, वरन आवश्यक है। इसका तब तक त्याग नहीं किया जा सकता जब तक उत्पादन की वर्तमान प्रणाली कायम रहेगी। इससे भी अधिाक तमाम देशों में ट्रेड यूनियनों की स्थापना तथा एकजुटता द्वारा इस कार्यकलाप को विश्वव्यापी रूप दिया जाना चाहिए। दूसरी ओर ट्रेड यूनियनें अनजाने ही मजदूर वर्ग के लिए ***संगठन–केन्द्र*** उसी तरह स्थापित कर रही थीं जिस तरह मध्ययुगीन म्युनिसपलटियों तथा कम्यूनों ने पूंजीपति वर्ग के लिए संगठन–केन्द्र स्थापित किये थे। यदि ट्रेड यूनियनों की पूंजी तथा श्रम के बीच छापामार लड़ाई की जरूरत पड़ती है तो वे ***संगठित शक्ति के रुप में उजरती श्रम तथा पूंजी के शासन की प्रणाली को खत्म करने के लिए और भी महत्वपूर्ण है।***

''(ख) उनका वर्तमान

पूंजी के विरूद्व स्थानीय तथा तात्कालिक संघर्षों में विशिष्ट रूप से व्यस्त रहने के कारण ट्रेड यूनियनें उजरती दासता की प्रणाली के विरूद्व संघर्ष करने की अपनी शक्ति को अभी स्वयं नहीं पहचान पायी हैं। इसलिए उन्होंने अपने को आम सामाजिक तथा राजनीतिक आंदोलनों से बहुत दूर रखा है। परन्तु इधार उनमें अपने महान ऐतिहासिक मिशन की कुछ चेतना उत्पन्न होती प्रतीत होती है ------

''(ग) उनका भविष्य

उनके प्राथमिक उद्देश्य कुछ भी हों उन्हें अब मजदूर वर्ग की ***पूर्ण मुक्ति*** के व्यापक हितार्थ उसके संगठनकारी केन्द्रों के रूप में सचेत रूप से कार्य करना सीखना चाहिए। उन्हें इस दिशा की ओर उन्मुख प्रत्येक सामाजिक तथा राजनीतिक आंदोलन का समर्थन करना चाहिए। अपने को पूरे मजदूर वर्ग का प्रतिनिधाि मानते हुए और उसके हितों की वकालत करते हुए वे सोसायटी से बाहर के लोगों को अपनी कतारों में शामिल करने के लिए कर्तव्यबद्व हैं। सबसे कम पारिश्रमिक वाले व्यवसायों के, उदाहरण के लिए खेत–मजदूरों के, जिन्हें असाधाारण परिस्थितियों ने असहाय बना दिया, हितों को पूरा–पूरा ध्यान रखना चाहिए। उन्हें पूरे संसार के सामने यह प्रदर्शित करना चाहिए कि उनके प्रयत्न संकीर्ण तथा स्वार्थपूर्ण नहीं हैं अपितु उनका लक्ष्य करोड़ों पददलित

लोगों को मुक्ति दिलाना है।'' (अस्थायी जनरल कौंसिल के डेलीगेटों के लिए निर्देश, कार्ल मार्क्स, मार्क्स–एंगेल्स संकलित रचनायें, खण्ड.**2**, भाग–**1**, पृष्ठ संख्या.**99–100** प्र.प्र. मास्को, जोर मूल में)

जैसा कि मार्क्स के ऊपर दिये गये उद्धरण से स्पष्ट है कि पूंजीवाद की शुरुआती मंजिल के दौरान ट्रेड यूनियनें खड़ी होने लगीं थी। उस समय इनका उद्देश्य मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था के दायरे के भीतर मजदूरों की आर्थिक हालत सुधाारना होता था। पहले वे सोचते थे कि उनका कार्य महज व्यक्तिगत पूंजीपतियों के खिलाफ मजदूरों के तात्कालिक हितों की रक्षा करना है। इससे पूंजीवादी शोषण के आधार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था और वे पूंजीवादी औद्योगिक सामजिक संगठन के दायरे के बाहर जाती भी नहीं थीं।

मजदूरी बढ़ाने, काम के घण्टे कम करने और जीवन के हालात को बेहतर बनाने के लिए पुरानी ट्रेड यूनियनें संघर्ष करती थीं। इसके लिए वे किसी खास पेशे के मजदूरों के बीच प्रतिस्पर्धा को खत्म करने, इसमें नये मजदूरों की पहुंच को सीमित करने तथा कुछ मामलों में हड़ताल करने का आम तरीका अपनाती थीं।

ये ट्रेड यूनियनें उत्पादन में लगे मजदूरों की जीवन स्थितियों और पूंजीवादी समाज के राजनीतिक और राज्य संगठन के बीच मौजूद प्रत्यक्ष सम्बन्धों को नहीं देख पाती थीं। इसका क्लासकीय उदाहरण ब्रिटिश ट्रेड यूनियनें थीं। वे अपने को संकीर्ण पेशागत खोल में बंद रखती थी। वे राजनीतिक लड़ाइयों मे किसी भी हिस्सेदारी से और आम तौर पर देश की राजनीति से पूर्णतया परहेज करती थीं। वे अपने पेशे से सम्बन्धित सवालों तक ही अपने को सीमित रखती थीं। इससे अक्सर ही उनका इस्तेमाल पूंजीपति वर्ग के राजनीतिक उद्देश्यों के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से होता था।

इन शुरुआती ट्रेड यूनियनों के ऐसे संकीर्ण चरित्र के बावजूद पूंजीपति वर्ग और इसके राज्य ने इनका हर तरीके से विरोधा किया। इनको हिंसा और दमन से कुचला। इनको नष्ट करने के लिए कानूनन प्रतिबंधा भी लगाये। पूंजीपति वर्ग यह महसूस करता था कि यूनियनें खतरनाक वर्ग संगठन के बतौर विकसित हो सकती हैं। उसे लगता था कि ये सर्वहारा वर्ग के वर्ग संघर्ष के ऐसे हथियार के बतौर विकसित हो सकती हैं जो पूंजीवादी व्यवस्था को ही समाप्त कर देंगी।

फिर भी ट्रेड यूनियनों के विरुद्व हिंसा, दमन और प्रतिबंधों की निर्मम कार्यवाहियों ने वे परिणाम नहीं दिये जिनकी पूंजीपति वर्ग उम्मीद करता था। पूंजीवाद के विकास का यह उत्पाद पूंजी और श्रम के बीच संघर्ष में खड़ा हुआ था। ट्रेड यूनियनें मजदूरों के लिए पूंजीवादी शोषण के विरुद्व नितांत आवश्यकता बन गयी थीं। ट्रेड यूनियनों को समाप्त करना सम्भव नहीं रह गया था। इसके विरुद्व दमनात्मक कार्यवाहियों ने केवल पूंजीवादी समाज के भीतर मौजूद वर्ग अंतर्विरोधों को घनीभूत किया था तथा व्यापक मजदूरों के समक्ष ज्यादा स्पष्टता के साथ उन्हें उजागर किया था। ट्रेड यूनियनों के हस्तक्षेप के बिना ही हड़तालें अधिकाधिक तीव्र होने लगीं, स्वतःस्फूर्त ढंग से और जोरदार होने लगी थीं जो उत्पादन को भारी पैमाने पर नुकसान पहुंचाती थीं तथा यहां तक कि व्यक्तिगत पूंजीपतियों की निजी सुरक्षा और सम्पत्ति के लिए खतरा बनती थीं।

यही वह चीज थी जिसने अंततोगत्वा पूंजीपति वर्ग को मजबूर किया था कि वह ट्रेड यूनियनों के अस्तित्व को स्वीकार करे। लेकिन वह इन्हें पालतू बनाने की कोशिशों में जुट गया था। वह इन्हें ऐसे संगठन में तब्दील करने में जुट गया था जो मजदूरों और पूंजीपतियों के बीच सम्बन्धों को संचालित करे तथा उद्योग में शांति कायम रखे।

ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग, जो लम्बे समय तक अंतर्राष्ट्रीय बाजार का सबसे बड़ा मालिक था तथा जो दुनिया में सबसे बड़े व धानी उपनिवेशों को मालिक था, के पास इस लक्ष्य को हासिल करने की पर्याप्त सम्भावनायें थीं। वह ऐसी ट्रेड यूनियनों को कुछ भौतिक लाभ दे सकता था जो मुख्यतया कुशल मजदूरों की थीं, अभिजात मजदूरों की थीं।

यह ट्रेड यूनियनों और पूंजीवादी संगठनों के बीच होने वाले सामूहिक संविदा के युग की शुरुआत थी। परस्पर सहमति से काम की दशायें, मजदूरी की दरें और काम के घण्टे तय किये जाते थे। इसके फलस्वरुप इन सामूहिक संविदाओं की जद में आने वाले उद्योगों की शाखाओं और उद्यमों में लम्बे समय के लिए हड़तालों का खतरा टल जाता था। इससे सुविदित मजदूरी के मानक स्थापित हुए। इसके अनुसार, किसी खास समय में जीवन की मूल आवश्यकताओं के अनुसार मजदूरी की दरें तय की जाती थीं। हालांकि गणना आम तौर पर इस प्रकार की जाती थी कि मजदूरी को यथासम्भव कम से कम स्तर पर रखा जाय। और मजदूरों तथा उनकी ट्रेड यूनियनों को पूंजीवादी उत्पादन में और ज्यादा गहराई में शामिल करने के लिए बहुत सारे उद्यमों ने मजदूरों को मुनाफे के कुछ प्रतिशत बोनस के रुप में हिस्सेदारी देने के तरीके अपनाये। इससे अधिकतम मुनाफा बढ़ाने में मजदूरों को सहयोगी बनाने में पूंजीपतियों को मदद मिलती थी। इस प्रकार, पूंजीपतियों ने मजदूरों की श्रम दक्षता को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने में सफलता हासिल की। उन्होंने हड़तालों से अपने को सुरक्षित कर लिया। भारी मुनाफे बटोरे। जबकि मजदूर इस भ्रम के शिकार हुए कि उनको उद्यम के मुनाफे में हिस्सेदारी मिली है। वे इस सोच के शिकार हो गये थे कि यदि उन्हें अपर्याप्त मिला तो इसका कारण पूंजीवादी व्यवस्था में नहीं, पूंजीपतियों के लालच में नहीं, पूंजीवादी उत्पादन की प्रणाली में नहीं, उसके वितरण में नहीं, बल्कि उनके काम करने की खुद की कमी के कारण था। वे इसे उत्पादन को सफल बनाने के लिए आवश्यक प्रयासों की अपनी असफलता में देखते थे।

मजदूरों के प्रति ऐसी औद्योगिक नीति अख्तियार करके पूंजीपतियों ने उन्हें यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि उनकी दशाओं में सुधाार हड़तालों के जरिये नहीं हासिल किया जा सकता, पूंजीवादी शोषण के विरूद्व संघर्ष के जरिए नहीं हासिल किया जा सकता बल्कि सिर्फ पूंजी की बढ़ोत्तरी के जरिए, उत्पादन के विस्तार के जरिए, निरंतर बढ़ते हुए पूंजीवादी मुनाफों के जरिए ही हासिल किया जा सकता है।

ग्रेट ब्रिटेन और कई अन्य देशों की अधिकांश ट्रेड यूनियनें मजदूरों के हितों की रक्षा करने तथा पूंजीवाद से लड़ने के औजार के बजाय पूंजीवादी उत्पादन में संतुलन व शांति की स्थापना करने के वाहकों में तब्दील हो गयी थीं। वे देश के पूंजीपतियों के ऐसे औजार में तब्दील हो गयी थीं जो व्यापक मजदूरों को अधीनता और गुलामी की स्थिति में रखती थीं। वे मजदूरों को उनके वर्ग–संघर्ष से हटाती थीं और यहां तक कि मुक्तिकामी मजदूरों को क्रांति के विरोधा में खड़ा करती थीं।

उन्नीसवीं सदी के मध्य में मार्क्स–एंगेल्स द्वारा कम्युनिस्ट घोषणा पत्र लिखे जाने तथा पहले इण्टरनेशनल की स्थापना ने मजदूर वर्ग के बीच मुक्ति के सुसंगत विचार प्रस्तुत किये। सर्वहारा वर्ग अपने खुद के वर्ग के बतौर तेजी के साथ संगठित होना शुरू हुआ तथा ट्रेड यूनियन आंदोलन अधिकाधिक मार्क्स के इस दृष्टिकोण को अपनाने लगा कि ट्रेड यूनियनों को व्यक्तिगत पूंजीपतियों के विरूद्व संघर्ष तक अपने को सीमित नहीं रखना चाहिए और कि पूंजीवादी शोषण की टहनियों को काटने पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि उसकी जड़ों पर भी प्रहार करना चाहिए। इस तरह से यह स्थापित किया गया कि उन्हें पूंजीवाद को समाप्त करने के संघर्ष तथा कम्युनिज्म के स्कूल में तब्दील हो जाना चाहिए। उन्हें पूंजीवाद के पतन के लिए गृहयुद्व में मुख्य भूमिका निभानी चाहिए।

इसके उलट पूंजीपति वर्ग ने ट्रेड यूनियन नेताओं को अपने प्रभाव में रखने के लिए ट्रेड यूनियन नेताओं और ट्रेड यूनियन नौकरशाही को घूस देने और भ्रष्ट करने की दीर्घकालीन व क्रमबद्व नीति को अपनाया। पूंजीवादी अखबारों में ट्रेड यूनियन नेताओं का योग्य और प्रतिभावान मजदूर प्रतिनिधियों के बतौर गुणगान गाया जाता था, उनको शानदार दावतें दी जाती थी, विभिन्न तरीकों से उनकी

खातिरदारी होती थी, उनको तमाम किस्म के फायदे पहुंचाये जाते थे, उन्हें संसद में प्रवेश करने में मदद दी जाती थी और इस तरह से पूंजीपति वर्ग उन्हें दृढ़ता से अपनी मुठ्ठी में रखता था।

यह स्वीकार करना होगा कि इस तरीके से पूंजीपति वर्ग अपने उद्देश्य को पूरा करने में बहुधाा सफल हो जाता था। वह अनेक ट्रेड यूनियनों को अपने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण में रखने में सफल हो जाता था।

रूस में मजदूर आंदोलन और सामाजिक–जनवादी मजदूर पार्टी

रूस में उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरूआत में मजदूर आंदोलन विकसित हुआ था। जारकालीन रूस में पहले मजदूरों को संगठित होने का कोई अधिकार नहीं था। वहां की सामाजिक–जनवादी मजदूर पार्टी (बाद में कम्युनिस्ट पार्टी) पहले अस्तित्व में आयी और उसने मजदूरों को गैर–कानूनी स्थिति में ही संगठित करना शुरू किया। रूस में औपचारिक ट्रेड यूनियनें **1905** में बननी शुरू हुई। इस समय मजदूर–हड़तालें संगठित की जाती थीं। मजदूर वर्ग में स्वतः स्फूर्त आंदोलन तेजी से विकसित हो रहा था। इसी दौर में रूसी सामाजिक जनवादी पार्टी के भीतर यह बहस शुरू हो गयी कि मजदूर आंदोलन और सामाजिक–जनवादी मजदूर पार्टी के बीच सम्बंधाों का चरित्र क्या हो।

अर्थवादियों तथा मेन्शेविकों के विरुद्व बोल्शेविकों का संघर्ष

लेनिन का यह संघर्ष मजदूर वर्ग के आंदोलन का सामाजिक–जनवादी मजदूर पार्टी (उस समय की कम्युनिस्ट पार्टी) के साथ सम्बन्धा पर केन्द्रित था। वे मजदूर वर्ग के आंदोलन को सामाजिक–जनवादी मजदूर पार्टी के साथ घनिष्ठ रूप से जोड़ने तथा निदेशित करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। जबकि अर्थवादी सामाजिक–जनवादी पार्टी के स्तर को नीचे गिराकर ट्रेड यूनियन चेतना के स्तर पर लाना चाहते थे। चूंकि उस समय रूस में ट्रेड यूनियनें भी कानूनी तौर पर प्रतिबन्धित थीं, इसलिए सामाजिक जनवादी और ट्रेड यूनियनें दोनों प्रतिबंधित हालत में काम कर रहे थे। लेकिन यह बहस एक तरफ ट्रेड यूनियनों को समाजवादी विचारधाारा से संचालित करना चाहिए या इन्हें स्वतंत्र रूप से काम करना चाहिए, इस पर केन्द्रित थी। स्वाभाविक है कि स्वतंत्र रूप से काम करने का मतलब यह था कि इन्हें पूंजीवादी विचारधाारा के अधीन कर लेना। उस समय के अर्थवादी यह तर्क देते थे कि रोज–ब–रोज की आर्थिक लड़ाइयां लड़कर मजदूर स्वतः ही राजनीतिक संघर्ष की ओर मुखातिब होंगे। लेकिन अर्थवादियों के राजनीतिक संघर्ष का मतलब सिर्फ पूंजीवादी व्यवस्था के दायरे में राजनीतिक सुधारों से था। वे मजदूर वर्ग को जनवादी क्रांति में नेतृत्व देने के लिए तैयार करने और उसके अनुसार सचेत व संगठित करने से इंकार करते थे। लेनिन ने अर्थवादियों के साथ संघर्ष में पहले यह स्थापित किया कि मजदूर वर्ग के भीतर ट्रेड यूनियन चेतना स्वतः स्फूर्तः ढंग से तो पैदा हो सकती है, लेकिन समाजवादी चेतना पैदा नहीं हो सकती है। समाजवादी चेतना सचेत तौर पर सामाजिक–जनवादी मजदूर पार्टी को बाहर से देनी होगी। यहीं पर लेनिन ने ट्रेड यूनियनों के भीतर सामाजिक–जनवादी पार्टी के प्रभाव और नियंत्रण को अधिकाधिक करने पर जोर देना शुरू कर दिया था।

लेनिन ने एक कदम आगे, दो कदम पीछे में कहा था :

> ''--- सामाजिक–जनवादियों में इस बात पर दो मत नहीं हो सकते कि इन यूनियनों को सामाजिक–जनवादी संगठनों के नियंत्रण और निर्देशन में काम करना ***चाहिए***। लेकिन ***इस आधार पर*** ट्रेड–यूनियनों के तमाम सदस्यों को अपने को सामाजिक–जनवादी पार्टी का सदस्य घोषित करने का हक दे देना स्पष्टतया बिल्कुल बेतुकी बात होगीऋ उससे, एक तरफ, तो ट्रेड–यूनियन आंदोलन के आकार को ***संकुचित कर देने*** और इस प्रकार मजदूरों की एकता को कमजोर कर देने का खतरा पैदा हो जायेगा। दूसरी तरफ, सामाजिक–जनवादी पार्टी के दरवाजे अस्पष्टता और ढुलमुलपन के लिए खोल देने का खतरा पैदा हो जायेगा।''

ट्रेड यूनियन तटस्थता के विरुद्व संघर्ष

ट्रेड यूनियन तटस्थता हमेशा से शुद्व रूप से पूंजीवादी विचार रहा है। राजनीतिक तटस्थता की आड़ में पूंजीपति वर्ग और उसके एजेण्टों का मजदूरों के आंदोलन को सर्वहारा वर्ग के वर्ग–संघर्ष से ट्रेड यूनियनों को अलग–थलग करना है तथा उन्हें पूंजीवादी शासन उपकरण में तब्दील करना है।

जब प्लेखानोव जैसे लोग ट्रेड यूनियन तटस्थता का समर्थन करते हुए बोले तो लेनिन ने लिखा था :

> ''... ... पूंजीपति वर्ग के वर्ग हित यूनियनों को अस्तित्वमान सामाजिक व्यवस्था के अंदर तुच्छ तथा संकुचित कार्यकलाप तक सीमित करने, उन्हें समाजवाद के साथ किसी प्रकार के सम्पर्क से पृथक रखने की कामना को अनिवार्यतः जन्म देते हैं, तथा तटस्थता का सिद्वान्त पूंजीपति वर्ग की इन कामनाओं को छिपाने का एक विचारधारात्मक पर्दा है। सामाजिक–जनवादी पार्टियों के अंदर संशोधानवादी लोग पूंजीवादी समाज में इस या उस तरह अपने लिए हमेशा रास्ता बना लेंगे।
>
> निस्संदेह, यूरोप के मजदूरों के राजनीतिक तथा ट्रेड यूनियन आंदोलन के आरम्भ के समय सर्वहारा संघर्ष के मूल क्षेत्र को ऐसी अवधि के दौरान, जब वह अपेक्षाकृत अविकसित था और जब पूंजीपति वर्ग यूनियनों पर कोई विधिवत प्रभाव नहीं डालता था, विस्तृत करने के साधन के रूप में ट्रेड यूनियन तटस्थता की पैरवी करना सम्भव था। परन्तु इस समय अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक जनवाद की दृष्टिकोण से ट्रेड यूनियन तटस्थता के पक्ष का कतई समर्थन नहीं किया जा सकता।'' (लेनिन, ट्रेड यूनियनें, ट्रेड यूनियन तटस्थता पृष्ठ.**215**,प्र.प्र. मास्को, **1978**)

वस्तुतः किसी भी देश में, ट्रेड यूनियनें तटस्थ नहीं थीं। मजदूर आंदोलन का समूचा इतिहास इसका प्रमाण है। ट्रेड यूनियनें या तो सर्वहारा के ध्येय के प्रति सच्चे रहकर पूंजीवाद के विरुद्व दृढ़तापूर्वक लड़ी हैं या प्रत्यक्ष या परोक्ष तौर पर, एक या दूसरे रूप में पूंजीपति वर्ग की सेवा में रही हैं। इनका इस्तेमाल पूंजीवादी पार्टियां अपने आपसी झगड़ों में करती रही हैं। और अक्सर मजदूर वर्ग की मुक्ति आंदोलन के विरुद्व भी करती रही हैं।

और क्या वास्तव में श्रम और पूंजी के बीच के संघर्ष में ट्रेड यूनियनें तटस्थ रह सकती हैं? जबकि वे अपनी प्रकृति के कारण ही इसमें सीधो शामिल रहती हैं।

सामाजिक अंधाराष्ट्रवाद के विरुद्व संघर्ष

जैसा पहले कहा जा चुका है कि प्रथम विश्व युद्व के दौरान यूरोप की अधिकांश ट्रेड यूनियनों ने सामाजिक–अंधाराष्ट्रवादी अवस्थिति अख्तियार कर ली थी। रूस में भी मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारियों के नेतृत्व में चलने वाली ट्रेड यूनियनों ने अंधा–राष्ट्रवादी अवस्थिति को अपनाया था। लेनिन ने इसके विरुद्व दृढ़तापूर्वक संघर्ष किया। उन्होंने बताया कि द्वितीय इंटरनेशनल में लम्बे समय से पल रहे अवसरवाद का फोड़ा सामाजिक–अंधाराष्ट्रवाद के रूप में फूट पड़ा है।

लेनिन ने मजदूर आंदोलन में लम्बे समय से व्याप्त अवसरवाद और विश्व युद्व के दौरान प्रकट हुए सामाजिक अंधाराष्ट्रवाद के बीच सम्बन्धाों का खुलासा करते हुए कहा :

> अवसरवाद तथा सामाजिक–अंधाराष्ट्रवाद का आर्थिक आधाार एक ही है : विशेषाधिकार प्राप्त उन मजदूरों तथा टुटपुंजियों की एक नगण्य श्रेणी के हित, जो अपनी विशेषाधिकारपूर्ण स्थिति की, उन मुनाफों के, जो उनके अपने राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग दूसरे राष्ट्रों की लूट से, अपनी महान शक्ति की हैसियत के लाभों से प्राप्त करते हैं, तुच्छांशों पर अपने 'अधिकार' की रक्षा कर रहे हैं।
>
> अवसरवाद और सामाजिक–अंधाराष्ट्रवाद का वैचारिक– राजनीतिक अंतर्य एक ही है : वर्ग संघर्ष के बजाय वर्ग–सहयोग, संघर्ष के क्रांतिकारी तरीकों का त्याग, क्रांति के लिए अपनी सरकार की कठिनाइयों से फायदा उठाने के बजाय कठिनाई की स्थिति में उसकी सहायता। अगर हम सभी यूरोपीय देशों को मिलाकर देखें, अगर हम व्यक्तियों (चाहे वे अधिाक से अधिाक आधिाकारिक ही क्यों न हों) पर ध्यान न दें, तो हम देखते हैं कि अवसरवादी ***प्रवृत्ति*** ही सामजिक– अंधाराष्ट्रवाद का मुख्य गढ़ बन गयी है और क्रांतिकारियों के खेमे से सब कहीं उसके खिलाफ कमोबेश निरंतर विरोधा की आवाजें सुनने में आ रही हैं। अगर, हम, मिसाल के लिए, **1907** की स्टुटगार्ड की अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में प्रवृत्तियों की ग्रुपबंदी को लें, तो पाते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय मार्क्सवाद साम्राज्यवाद का विरोधाी था और अंतर्राष्ट्रीय अवसरवाद उस समय भी साम्राज्यवाद के पक्ष में था। (लेनिन साम्राज्यवाद और युद्व पृष्ठ. **168**, संकलित रचनायें, खण्ड.**5**, प्र.प्र. मास्को, जोर मूल में)

आगे वे कहते हैं :

> ''पिछले जमाने में, युद्व से पहले तक अवसरवाद को यद्यपि अक्सर भटकावपंथी चरमपंथी फिर भी सामाजिक–जनवादी पार्टी का वैधा भाग माना जाता था। युद्व ने प्रकट कर दिया है कि भविष्य में ऐसा नहीं हो सकता। अब अवसरवाद परिपक्व हो गया है वह मजदूर वर्ग के आंदोलन में बुर्जुआ वर्ग के भेदिये की अपनी भूमिका पूरी तरह अदा कर रहा है। अवसरवादियों के साथ एकता सरासर मक्कारी बन गयी है, जिसकी मिसाल हम जर्मन–समाजवादी पार्टी में देखते हैं। सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर (मिसाल के लिए, चार अगस्त के मतदान के दौरान) अवसरवादी अपने अल्टीमेटम लेकर सामने आते हैं, जिसे वे बुर्जुआ वर्ग के साथ अपने अनगिनत संबंधाों, ट्रेड यूनियनों की कार्यकारिणियों में अपनी बहुसंख्या, आदि की सहायता से कार्यान्वित करते हैं। आज अवसरवादियों के साथ ***एकता*** का ***वास्तविक*** अर्थ है मजदूर वर्ग को अपने राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के मातहत बना देना, दूसरी जातियों के उत्पीड़न तथा महान शक्ति के विशेषाधिकारों के लिए लड़ने के प्रयोजन से उसके साथ गठजोड़ करना। उसका अर्थ है सभी देशों के क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग में ***फूट*** पैदा करना।'' (वही, पृष्ठ **168.69** जोर मूल में)

लेनिन ने सुधाारवाद और अंधाराष्ट्रवाद के असली वाहक के बतौर काम करने वाले मजदूर वर्ग के भीतर साम्राज्यवादी गुर्गों की चर्चा करते हुए कहा :

> ''स्पष्ट है कि ऐसे विराट ***अतिलाभ*** में से (अतिलाभ इसलिए कि वह उस सारे लाभ के अतिरिक्त प्राप्त किया जाता है, जो पूंजीपति अपने देश के मजदूरों के शोषण से वसूल करते हैं) मजदूर नेताओं और अभिजात मजदूरों के ऊपरी स्तर को ***घूस देकर अपनी ओर कर लेना संभव है*** और उन्नत देशों के पूंजीपति यही कर रहे हैं, वे उन्हें हजारों तरह के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, खुले और छिपे तरीकों से घूस दे रहे हैं।
>
> बुर्जुआ रंग में रंगे मजदूरों या अभिजात मजदूरों का यह स्तर, जो रहन–सहन की दृष्टि से, कमाई की मात्रा की दृष्टि से और अपनी समूची विश्वदृष्टि के लिहाज से बिल्कुल कूपमंडूक होता है, दूसरे इण्टरनेशनल का मुख्य आधाार है और हमारे समय में ***बुर्जुआ वर्ग का*** मुख्य ***सामाजिक*** (सैनिक नहीं) आधाार बना हुआ है। कारण कि **मजदूर** आंदोलन के भीतर ये लोग ही ***बुर्जुआ वर्ग*** के असली ***दलाल***, पूंजीपति वर्ग के मजदूर गुर्गे **(संइवनत सपमनजमदंदजे व जीम बंचपजंसपेज बसें)**, सुधारवाद और अंधाराष्ट्रवाद के असली वाहक हैं। सर्वहारा वर्ग और बुर्जुआ वर्ग के बीच गृहयुद्व होने पर ये लोग अनिवार्य रूप से और बड़ी तादाद में बुर्जुआ वर्ग का साथ देते हैं, कम्यूनार्डों के विरुद्व वे वेर्साईवालों का साथ देते हैं।'' (लेनिन,' साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था' पृष्ठ **212.213ए** संकलित रचनायें, खण्ड **5ए** प्र.प्र.मास्को, जोर मूल में)

लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने प्रथम विश्व युद्व के दौरान सामाजिक–अंधराष्ट्रवाद के खिलाफ संघर्ष चलाकर अपने देश के पूंजीपति वर्ग के विरुद्व गृहयुद्व का नारा देकर अक्टूबर क्रांति को सम्पन्न करने में मजदूर वर्ग की शिरकत को अधिाकाधिाक बढ़ाया। यह ट्रेड यूनियनों की व्यापक भागीदारी के बिना सम्भव नहीं हो सकता था। ट्रेड यूनियनों का नेतृत्व व्यापक मजदूरों में तभी स्थापित हो सकता था, जब वे राजनीतिक तौर पर समूचे मजदूर वर्ग को सामाजिक–अंधाराष्ट्रवाद के विरुद्व खड़ा करने में समर्थ होतीं।

यह परिस्थिति रातों–रात नहीं पैदा हो सकती थी। दरअसल, अपने जन्म काल से ही बोल्शेविक न सिर्फ अवसरवाद के विरुद्व संघर्ष कर रहे थे बल्कि उनका संघर्ष मजदूर आंदोलन के भीतर निम्न पूंजीवादी प्रवृत्ति की एक धाारा अराजकतावाद के खिलाफ भी था। अक्सर अराजकतावाद मजदूर आंदोलन के अवसरवादी पापों के लिए एक प्रकार का दण्ड रहा है। बोल्शेविक शुरुआती दौर में समाजवादी–क्रांतिकारी पार्टी के अराजकतावाद को पराजित करके ही मजदूर आंदोलन को दृढ़ जमीन पर खड़ा कर सके थे। बोल्शेविक पार्टी ने मजदूर वर्ग की आर्थिक हड़तालों, राजनीतिक हड़तालों और विद्रोह में अगुवायी की। **1905** की क्रांति में आर्थिक हड़तालों ने देशव्यापी राजनीतिक हड़तालों का रूप ले लिया था। राजनीतिक हड़तालों ने विद्रोह का रूप धाारण कर लिया था। इसमें उन्होंने संघर्ष के संसदीय रूपों तथा गैर–संसदीय रूपों की, संसद में भाग लेने की कार्यनीति से संसद का बायकॉट करने की कार्यनीति की, संघर्ष के कानूनी रूपों और गैर–कानूनी रूपों की अदला–बदली, इसी तरह इन रूपों के अंतः सम्बंधा और सम्पर्क सूत्र विकसित करने में क्षमता व दक्षता दिखायी। इसी प्रकार, जब प्रतिक्रियावाद का काल आया, जब **1905 .07** की क्रांति पराजित हो गयी तो बोल्शेविकों ने पीछे हटने की एक क्रमबद्व नीति अपनायी। अपनी कतारों में कम से कम भगदड़ होने दी। बाद में लेनिन ने इसका समाहार करते हुए लिखाः

> ''बोल्शेविकों को यह सफलता इसलिए मिली कि उन्होंने उन तमाम क्रांतिकारी लफ्रफाजों का भण्डाफोड़ किया और उन्हें पार्टी से निकाल बाहर किया, जो यह समझने से इंकार करते थे कि कभी पीछे भी हटना पड़ता है, कि पीछे हटने की दक्षता का होना जरूरी है, कि यह सीखना बिल्कुल आवश्यक है कि घोर प्रतिक्रियावादी संसदों में, घोर प्रतिक्रियावादी ट्रेड यूनियनों, सहकारी

समितियों, बीमा संस्थाओं और दूसरे ऐसे ही संगठनों में कानूनी ढंग से काम किया जाये।'' (लेनिन, वामपंथी कम्युनिज्म एक बचकाना मर्ज, पृष्ठ 258, संकलित रचनायें, खण्ड 9, प्रगति प्रकाशन, मास्को)

फरवरी क्रांति से पहले रूस में मजदूर आंदोलन

बीसवीं सदी की शुरुआत में रूस में तीस लाख फैक्टरी मजदूर, रेलकर्मी व खदान मजदूर थे। वे अत्यंत कठिन जीवन व कार्य की हालात में रहते थे। किसी भी किस्म की श्रम सुरक्षा नहीं थी। 10 से 12 घण्टे तक काम का दिन, अत्यंत कम मजदूरी, गंदी बैरकों में भीड़ भरा जीवन, अत्यल्प भोजन, इत्यादि में जीवन–बसर तो था ही, साथ में राजनीतिक अधिकारों का पूर्णतया अभाव था। हड़तालों पर प्रतिबंधा था। संगठन बनाने का अधिकार नहीं था। मजदूरों के पास काम पर रखे जाने और काम की स्थितियों में सुधाार के लिए लड़ने के अवसरों का अभाव था। मजदूर वर्ग के पास अपने वर्ग स्वार्थों की कानूनी अभिव्यक्ति की कोई सम्भावना नहीं थी।

ऐसी ही परिस्थिति में रूस में मजदूर आंदोलन की शुरुआत हुई थी। वे फैक्टरी मालिकों द्वारा जुर्मानों से पीड़ित थे। जारशाही के निरंकुश शासन के विरुद्व वस्तुगत तौर पर उनका संघर्ष बनता था। इसी प्रक्रिया में आगे बढ़े हुए मजदूरों ने राजनीति और समाजवाद में ज्ञान हासिल करने में रुचि प्रदर्शित करना शुरू कर दिया। वे सामाजिक–जनवादी समूहों के इर्द–गिर्द इकट्ठा होने लगे।

1901–1904 का समय रूसी मजदूर आंदोलन में व्यापक उभार का समय था। 19वीं सदी के अंत में औद्योगिक संकट आ गया था। रूस में बड़े पैमाने पर बड़े और छोटे कारखाने बंद हो गये थे। मजदूर बेरोजगार हो रहे थे। ऐसे ही समय में हड़तालों का सिलसिला शुरू हो गया। हड़तालों का जारशाही ने निर्मम दमन किया। मजदूर आंदोलन के साथ ही किसानों के आंदोलन तेज होते गये। जारशाही का व्यापक दमन मजदूर आंदोलन के उभार को और बढ़ाता गया। ऐसे में जारशाही ने मजदूरों के नकली संगठन बनाये। ऐसे संगठनों को उस समय 'पुलिस समाजवादी' संगठन कहा जाता था।

इसी दौरान रूस की सामाजिक–जनवादी मजदूर पार्टी अस्तित्व में आ चुकी थी। इस पार्टी के गठन में अर्थवादियों को पहले शिकस्त मिली और गुटों की स्थानीय मानसिकता को पराजित करना पड़ा। लेनिन के नेतृत्व में रूसी मजदूर वर्ग के हिरावल पार्टी की आधाारशिला रखी गयी। 1903 में रूसी सामाजिक–जनवादी पार्टी में बोल्शेविक और मेंशेविक के बीच विभाजन हो गया। वे क्रमशः क्रांतिकारी व अवसरवादी पक्ष के आधाार पर बंट गये थे।

रूस–जापान युद्व में रूस की जारशाही की करारी हार हुई। जारशाही इस युद्व के जरिए यह सोचती थी कि वह मजदूर आंदोलन को कुचल देगी। लेकिन इसका उल्टा हुआ। युद्व से मजदूरों व अन्य मेहनतकशों की हालत और खराब हो गयी। लोगों का धौर्य टूटने लगा था। हड़तालों का सिलसिला और तेज हो गया।

9 जनवरी 1905 को जारशाही के लिए काम करने वाले पादरी गैपन के नेतृत्व में मजदूरों का एक प्रतिनिधिमण्डल शिशिर प्रासाद की तरफ गया। वे जारशाही के सामने अर्जी लेकर गये थे। इस प्रदर्शन पर जारशाही ने गोली बरसायी और हजारों मजदूर मारे गये। इस दिन का नाम 'खूनी इतवार' पड़ गया। इसके बाद मजदूरों की आम हड़तालों और प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हो गया। किसानों के आंदोलन बढ़ने लगे। पोतेम्किन युद्वपोत में विद्रोह हो गया। अब पुलिस और फौज के साथ जनता की हथियारबंद टक्कर होने लगी थी। हड़तालों के साथ–साथ अब सोवियतों का आविर्भाव होना शुरू हो गया था। ये नयी क्रांतिकारी सत्ता के भ्रूण रूप में पैदा हो गयी थीं। वे तमाम कानूनों और नियमों के बावजूद क्रांतिकारी तरीके से खड़ी हुई थीं। वे लोगों की रचनात्मकता का, उनकी स्वतंत्र पहलकदमी का नतीजा थीं। सोवियतें हड़तालों को संगठित करती थीं। फैक्टरी और संयत्रों में आठ घण्टे के काम के दिन को लागू कराती थीं। वे आम व्यवस्था कायम रखती थीं। वे नगरपालिका की सेवाओं, खुदरा व्यापार, इत्यादि पर निगरानी रखती थीं। उन्हें जन समुदाय का व्यापक समर्थन मिला हुआ था।

सोवियतों के विकास की मुख्य प्रवृत्ति इनका क्रांतिकारी जनवादी सत्ता के निकायों में रूपान्तरण की थी। वे देश में सशस्त्र संघर्ष की तैयारी के सदर मुकाम के बतौर विकसित हो रही थीं। बोल्शेविक इसी दिशा में उन्हें ले जा रहे थे। मेंशेविक सोवियतों की क्रांतिकारी भूमिका को कम से कम करना चाहते थे।

क्रांतिकारी उभार के दौरान हजारों मजदूर बोल्शेविक पार्टी की तरफ खिंच आये थे। इसी दौरान ट्रेड यूनियनों का गठन शुरू हो गया था। जनवरी व फरवरी 1905 में बड़े औद्योगिक केन्द्रों में मजदूरों ने स्वतःस्फूर्त ढंग से संगठित होना शुरू कर दिया था जो ट्रेड यूनियनों की शुरुआत थी।

धाातु मजदूरों की यूनियनें पेत्रोग्राद सहित कई नगरों में बन गयीं। टेक्सटाइल मजदूरों ने अपनी यूनियनें बनायी। अखिल रूसी रेल यूनियन अप्रैल, 1905 में बनी। नवम्बर, 1905 तक पेत्रोग्राद की ट्रेड यूनियनों के केन्द्रीय ब्यूरो का गठन किया गया।

अक्टूबर 1905 तक यह तय हो चुका था कि अब शांतिपूर्ण हड़तालें सम्भव नहीं रह गयी थीं। इसके पहले से ही मजदूर आत्म रक्षा दल संगठित करना शुरू कर चुके थे। लेनिन ने इनके गठन को बहुत महत्व दिया था। उन्होंने कहा था कि ये विद्रोह के संगठन हैं, क्रांतिकारी शासन के संगठन हैं।

इसी के साथ ही क्रांति के पक्ष में सेना को लाने का काम और जोर–शोर से शुरू हो गया था। लेनिन ने क्रांति के दौरान लिखा था कि सशस्त्र बल तटस्थ नहीं रह सकते और न ही उन्हें रहना चाहिए। राजनीति में उन्हें न शामिल करने का नारा पूंजीपति वर्ग और जारशाही के पाखण्डी चाकरों का नारा है। वे हमेशा सशस्त्र बलों को प्रतिक्रियावादी राजनीति के लिए इस्तेमाल करते हैं।

इस प्रकार मजदूरों, किसानों और सैनिकों के बीच काम करते हुए 9 दिसम्बर को मास्को में पहली बैरीकेड बनना शुरू हो गयी। मास्को विद्रोह व्यापक चरित्र वाला विद्रोह था। चूंकि क्रांतिकारी वर्गों की पर्याप्त एकता नहीं थी, विद्रोह में पर्याप्त रूप से तालमेल का अभाव था। वह सतत निर्मम, संगठित, आक्रामक और एक साथ नहीं था। इस सबसे यह विद्रोह पराजित हुआ।

दिसम्बर, 1905 के विद्रोह की पराजय का अर्थ क्रांति का अंत नहीं था। अभी लोगों का असंतोष और ज्यादा बढ़ रहा था। यही कारण था कि बोल्शेविकों ने विद्रोह को देशव्यापी पैमाने पर जारी रखने का फैसला लिया था।

पहली रूसी क्रांति असफल हो गयी। लेकिन इसने सेना व नौसेना के एक हिस्से सहित समूचे देश की मेहनतकश आबादी को अपने आगोश में ले लिया था। 1905–1907 की रूसी क्रांति विश्व मुक्ति आंदोलन के विकास में भारी छलांग थी।

मुख्य बात वह परिवर्तन थे जो मजदूरों के खुद की चेतना, मानसिकता और उनकी इच्छा शक्ति में आये थे। सर्वहारा वर्ग ने वर्ग के बतौर अपनी शक्ति और महत्व को महसूस कर लिया था। जार पर उसका विश्वास उठ चुका था। मजदूरों की राजनीति में जीवंत दिलचस्पी पैदा हो चुकी थी तथा उन्हें खुद अपने सम्मान की अनुभूति हो चुकी थी।

इसी दौरान रूसी मजदूर वर्ग ने क्रांतिकारी संसदवाद का इस्तेमाल करने का तरीका सीखा। उन्होंने संघर्ष के नये–नये तरीके ईजाद किये। बोल्शेविक पार्टी ने क्रांति की पराजय के बाद भयंकर दमन के समय में कैसे सिलसिलेवार तरीके से पीछे हटा जाय, इसका भी रास्ता दिखाया। उन्होंने क्रांतिकारी पातों में भगदड़ नहीं होने दी। मेंशेविकों के अवसरवादी रुझानों का, मजदूर वर्ग को पूंजीपति वर्ग के पीछे चलने का उन्होंने विरोधा किया और शिकस्त दी। बोल्शेविक पार्टी ने जारशाही को उखाड़ फेंक कर मजदूरों और किसानों के क्रांतिकारी अधिनायकत्व का नारा दिया था।

1908–12 के बीच भंयकर दमन के काल में उन्होंने मजदूर वर्ग को आगे की तैयारियों के लिए तैयार किया। **1905** की क्रांति के कार्यों को पूरा करने के लिए उन्हें विचारधाारात्मक, राजनीतिक तौर पर तैयार किया और **1912** के बाद जब फिर एक बार उभार की परिस्थितियां निर्मित हुईं तो बोल्शेविक पार्टी फिर से व्यापक मजदूर आंदोलन को संगठित करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ी। इस प्रकार वे संगठित ट्रेड यूनियन आंदोलन और मजदूर वर्ग को **1917** की फरवरी क्रांति में नेतृत्व देने में कामयाब रहे।

पूंजीवादी जनवादी क्रांति के बाद ट्रेड यूनियनों की भूमिका

फरवरी क्रांति के बाद शुरुआती दिनों में जब शहर में पुलिस और हथियारबंद दस्ते सड़कों से गायब हो गये तो उनका स्थान मजदूरों के हथियारबंद दस्तों और मजदूरों की मिलिशिया ने ले लिया। यह भी सृजनात्मक क्रांतिकारी पहलकदमी का एक लक्षण था। बोल्शेविकों द्वारा सर्वहारा मिलिशिया गठित करने के आह्वान का सभी जगहों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उन सभी सोवियतों में जहां बोल्शेविक मजबूत स्थिति में थे, उन्होंने मजदूरों की मिलिशिया संगठित करने में सक्रिय भूमिका निभायी। समझौतावादियों ने मिलिशिया के संगठन का विरोधा किया। जिन सोवियतों में उनका नेतृत्व था उनमें भी मजदूरों ने उनके बावजूद अक्सर मिलिशिया का गठन किया। लेनिन ने मिलिशिया के गठन को सिद्वान्ततः और व्यवहारतः दोनों तरह से निर्णायक महत्व की घटना करार दिया। उन्होंने कहा कि तब तक क्रांति को सुरक्षित नहीं किया जा सकता, इसकी उपलब्धियों की गारण्टी नहीं की जा सकती, इसका और आगे विकास असम्भव है, जब तक इस कदम को आम न बना दिया जाय, जब तक कि समूचे देश में इसे न चलाया जाय। कई स्थानों पर मजदूरों की मिलिशिया रेड गार्ड के नाम से खड़ी की गयीं। बाद में अधिकांश ने यही नाम ग्रहण कर लिया। रेड गार्ड पर निर्भर करते हुए मजदूर उद्यमों की रखवाली करते थे, कस्बों में व्यवस्था कायम रखते थे और खाद्य सामग्री का उचित वितरण करते थे। सोवियतें रेड गार्ड की मदद से अपने फैसले लागू करती थीं।

बोल्शेविक ट्रेड यूनियनों की भूमिका और प्रभाव बढ़ाने के लिए लड़े। ट्रेड यूनियनें तेजी के साथ बढ़ी। जहां मार्च और अप्रैल में ट्रेड यूनियनों के पांच लाख सदस्य थे वहीं अक्टूबर तक वे तीस लाख से ऊपर पहुंच गये थे। यूनियनों ने अधिकांश औद्योगिक मजदूरों को संगठित कर लिया था। धातु मजदूरों और टेक्सटाइल मजदूरों की यूनियनें सबसे बड़ी और अच्छी तरह से संगठित यूनियनें थीं। अनेक बड़ी ट्रेड यूनियनों के नेतृत्व में मेंशेविक थे जो उनकी गतिविधियों को सुधारवादी रास्ते पर चलाने की कोशिश करते थे और राजनीतिक संघर्ष में उनकी तटस्थता पर जोर देते थे। यह उनके प्रभाव में गिरावट का मुख्य कारण बन गया था। कुछ ही महीनों में बोल्शेविकों ने कई यूनियनों को अपने पक्ष में कर लिया था। ये यूनियनें ऐसे जुझारू संगठन बन गईं जो न सिर्फ अपने आर्थिक हितों की रक्षा में बल्कि राजनीतिक गतिविधि चलाने में काम करती थीं।

मार्च, **1917** में सोवियतों के साथ–साथ उद्यमों में कार्य कमेटी बननी शुरू हो गयी थीं। वे जन क्रांतिकारी पहलकदमी से पैदा हुए नये संगठन थे। वे हड़ताल कमेटियों से उभरे थे। लेकिन इनके कार्य ज्यादा व्यापक थे। वे काम के स्थान पर चुने जाते थे। वे उद्यम के सभी मजदूरों को, वे चाहे किसी भी यूनियन के हों, एकताबद्व करते थे और उनका काम मजदूरों के तात्कालिक हितों की रक्षा करना होता था। अपने दैनिक कार्य में कार्य कमेटी मिल या फैक्टरी को चलाने में सक्रिय हस्तक्षेप करती थी, क्रांतिकारी व्यवस्था कायम करती थी, नियोक्ताओं और प्रबन्धकों की गतिविधियों को नियंत्रित करती थी, पूंजीपतियों द्वारा उत्पादन को ठप्प करने वाली तोड़–फोड़ की गतिविधियों के चलते कभी–कभी उद्यम के प्रबंध को भी ले लेती थीं। ये कमेटियां तत्काल ही बोल्शेविकों की दृढ़ दुर्ग बन गयी थी।

मजदूरों के नियंत्रण के आंदोलन का दायरा बढ़ता चला गया। **1917** की गर्मियों में **28** लाख तक मजदूर इसमें शामिल हो गये जो रूस के कुल औद्योगिक सर्वहारा का तीन–चौथाई थे। कार्य कमेटियों और नियंत्रण व प्रबंधा आयोगों द्वारा नियंत्रण कायम किया जाता था। पूंजीपतियों द्वारा उद्यमों को बंद करने के प्रयासों को वे रोकती थीं। अर्थव्यवस्था में गड़बड़ी और अराजकता पैदा करने के प्रयासों को वे रोकती थीं। ये प्रयास पूंजीपतियों द्वारा क्रांति के विरुद्व अपनी लड़ाई के हिस्से थे। मजदूर लेखा परीक्षक कच्चे मालों और ईंधन के भण्डारों की जांच करते थे, उद्यमों से मशीनरी और तैयार माल की निकासी पर निगरानी रखते थे, वित्तीय लेन–देन की जांच करते थे, मजदूरी और नौकरी से निकाले जाने के मामलों को देखते और उद्यमों की रखवाली को संगठित करते थे। यह सब वे बोल्शेविकों के सत्ता में आने से पहले कर रहे थे। बोल्शेविक मजदूर नियंत्रण की इस लड़ाई को बहुत महत्व देते थे। इनका महत्व पूंजीपतियों की निरंकुशता को कुचलने और उद्योग में तोड़–फोड़ करने से रोकने तक ही नहीं था। मजदूरों के नियंत्रण के संघर्ष और उसे लागू करने के दौरान मजदूरों को खुद प्रबंधकीय कौशल और राजनीतिक अनुभव हासिल हुए, उनकी वर्ग चेतना बढ़ी और उनकी क्रांतिकारी पहलकदमी बढ़ी। बोल्शेविकों ने मजदूर नियंत्रण को एक महत्वपूर्ण साधन माना जो जनसमुदाय को सत्ता के संघर्ष तक ले जाता था, क्योंकि यह समझौतावादियों का असली चेहरा उजागर करने में मदद करता था और पूंजीवादी प्रभुत्व को समाप्त करने की आवश्यकता पर मजदूरों में भरोसा पैदा करता था।

जब अक्टूबर क्रांति हुई तब सोवियतों में, रेड गार्ड में तथा कार्य कमेटियों में संगठित मजदूरों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और क्रांति को सम्पन्न करने में निर्णायक योगदान दिया।

बोल्शेविक पार्टी ने रूसी क्रांति से जो अनुभव हासिल किये थे, उनका समाहार करते हुए जर्मनी के वामपंथी कम्युनिस्टों की आलोचना करते हुए लेनिन ने लिखा थाऋ

> ''... और जर्मन वामपंथी कम्युनिस्ट यही मूर्खता करते हैं, जब वे ट्रेड–यूनियनों के ***नेताओं*** के प्रतिक्रियावादी और क्रांति विरोधी स्वरूप की ***वजह से*** झट इस नतीजे पर पहुंच जाते हैं कि ... ट्रेड यूनियनों से अलग हो जाना चाहिए!! कि उनके अंदर काम करने से इनकार किया जाना चाहिए!! कि नये और ***बनावटी*** रूप के मजदूर संगठन खड़े किये जाने चाहिए!! यह एक अक्षम्य मूर्खता है और कम्युनिस्ट बुर्जुआ वर्ग की इससे बड़ी और कोई सेवा नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे मेंशेविक ट्रेड–यूनियनों के दूसरे सभी अवसरवादी, सामाजिक–अंधराष्ट्रवादी, काउत्स्कीवादी नेताओं की भांति ही मजदूर आंदोलन के भीतर बुर्जुआ वर्ग के दलालों के सिवा और कुछ नहीं हैं (मेंशेविकों के खिलाफ हम सदा यही कहते आये हैं), या यदि अमरीका में डेनियल डेलियोन के अनुयाइयों के बढ़िया और एकदम सच्चे कथन को दुहराया जाये, तो वे पूंजीपति वर्ग के मजदूर गुर्गे (**संइवत स्पमनजमदजंदजे वि जीम बंचपजंसपेज बसें**) के सिवा और कुछ नहीं हैं। प्रतिक्रियावादी ट्रेड–यूनियनों में काम करने से इंकार करने का यह मतलब होता है कि हम ऐसे बहुसंख्यक मजदूरों को, जिनका अभी काफी विकास नहीं हुआ है या जो पिछड़े हुए हैं, प्रतिक्रियावादी नेताओं के, बुर्जुआ वर्ग के दलालों के, अभिजात मजदूर वर्ग के लोगों के या बुर्जुआकृत मजदूरों के असर में छोड़ देंगे। (तुलना कीजिएः अंग्रेज मजदूरों के बारे में **1858** में लिखा गया मार्क्स के नाम एंगेल्स का पत्र)।
>
> ''यह बेहूदा सिद्वान्त कि कम्युनिस्टों को प्रतिक्रियावादी ट्रेड यूनियनों में काम नहीं करना चाहिए, इस बात को एक दम स्पष्ट कर देता है कि जन–साधारण पर प्रभाव डालने के सवाल के प्रति इन वामपंथी कम्युनिस्टों का रवैया कितना सतही है, कि वे जनसाधारण की दुहाई का कितना दुरुपयोग करते हैं। जनसाधारण की सहायता कर सकने के लिए, जनसाधारण की सहानुभूति

और समर्थन प्राप्त करने के लिए आपको कठिनाइयों से नहीं डरना चाहिए, इस बात से नहीं घबराना चाहिए कि नेता (जो अवसरवादी और सामाजिक–अंधराष्ट्रवादी होने के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रायः बुर्जुआ वर्ग तथा पुलिस से संबंधित होते हैं) छिद्रान्वेषण करेंगे, रुकावटें डालेंगे, अपमान करेंगे तथा सतायेंगे, बल्कि ***जहां भी जनसाधारण मिलें, वहीं जाकर अनिवार्यतः काम करना चाहिए*** । आपको हर प्रकार की कुरबानी करने और बड़ी से बड़ी बाधाओं को पार करने में समर्थ होना चाहिए ताकि आप ठीक उन्हीं संस्थाओं, समितियों और संगठनों में, भले ही वे सबसे प्रतिक्रियावादी तक हों, जाकर नियमित रूप से, लगन के साथ, डटकर और धैर्यपूर्वक प्रचार और आंदोलन कर सकें, जहां सर्वहारा या अर्द्ध–सर्वहारा मौजूद हैं। जन–साधारण तो ट्रेड यूनियनों और (कम से कम कभी–कभी) मजदूरों की सहकारी समितियों में ही मिलते हैं।''.... (लेनिन, वही, पृष्ठ **288–289**)

और आगे वे कहते हैं :

इससे बड़ी मूर्खता और क्रांति के लिए इससे बड़े नुकसान की कल्पना तक नहीं की जा सकती, जो उसे वामपंथी क्रांतिकारी पहुंचाते हैं! यदि आज के रूस में, रूस तथा एंटेंट के बुर्जुआ वर्ग पर अभूतपूर्व विजय प्राप्त करने के ढाई वर्ष बाद भी हम अधिनायकत्व को स्वीकार करना ट्रेड–यूनियनों की सदस्यता की शर्त बना दें, तो हम बड़ी गलती करेंगे, जन–साधारण पर अपना प्रभाव कम कर देंगे और मेंशेविकों की मदद करेंगे, क्योंकि कम्युनिस्टों का तो पूरा काम ही पिछड़े हुए तत्वों को ***कायल*** करने में समर्थ होना, ***उनके बीच*** काम करने में समर्थ होना है, न कि बनावटी तथा बचकाने वामपंथी नारों के जरिए जनसाधारण और अपने बीच ***दीवारें*** खड़ी करना। (वही पृष्ठ **290**)

आगे भी,

''.. ... इसमें संदेह नहीं है कि अवसरवाद के ये नेता महाशय कम्युनिस्टों को ट्रेड–यूनियनों से बाहर रखने के लिए, उन्हें किसी न किसी तरह ट्रेड–यूनियनों से निकालने के लिए, ट्रेड यूनियनों के अंदर उनका काम अधिक से अधिक अप्रिय बना देने के लिए, उनका अपमान करने, बदनाम करने और सताने के लिए बुर्जुआ कूटनीति के हर हथकण्डे का प्रयोग करेंगे और बुर्जुआ सरकारों की, पादरियों की, पुलिस और अदालत की मदद लेने से भी नहीं चूकेंगे। हमें इस सबका सामना करना सीखना पड़ेगा, हर तरह के बलिदान के लिए तैयार रहना पड़ेगा, यहां तक कि–यदि जरूरत हो, तो तरह–तरह के दांव–पेंचों, चालों, गैर–कानूनी तरीकों, चुप्पी साधने और सत्य को प्रकट न होने देने के उपायों का भी प्रयोग करना होगा ताकि हम ट्रेड–यूनियनों में घुस सकें, उनके अंदर रह सकें और वहां हर हालत में कम्युनिस्ट काम चला सकें। जारशाही के राज में **1905** तक हमारे सामने काम की कानूनी संभावनायें जरा भी नहीं थीं, परंतु जब राजनीतिक पुलिस वाले जुबातोव ने क्रांतिकारियों को फंसाने और उनका विरोध करने के उद्देश्य से मजदूरों की यमदूत सभाओं और मजदूर यूनियनों का संगठन किया, तो हमने अपनी पार्टी के सदस्यों को इन सभाओं और इन यूनियनों में काम करने के लिए भेजा (इनमें से एक साथी की मुझे व्यक्तिगत रूप से याद है–पीटर्सबर्ग के प्रमुख मजदूर साथी बाबुश्किन, जिन्हें **1906** में जार के जनरलों के आदेश से गोली से मार दिया गया था)। इन साथियों ने जन–साधारण से सम्पर्क स्थापित किया, वे प्रचार–कार्य जारी रखने में सक्षम रहे और मजदूरों को जुबातोव के दलालों के असर से सफलतापूर्वक बाहर निकाल लाये। बेशक, पश्चिमी यूरोप में, जो विशिष्ट रूप से दृढ़ कानूनवादी, संविधानवादी, बुर्जुआ–जनवादी पूर्वाग्रहों से खासतौर से ग्रस्त है, इस तरह का काम करना मुश्किल है। परन्तु यह काम किया जा सकता है और करना चाहिए, नियमित रूप से करना चाहिए।'' (वही, पृष्ठ **290–91**)

लेनिन यहां ट्रेड यूनियनों और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच रिश्ते बनाने उन्हें सुदृढ़ करने तथा कम्युनिस्ट पार्टी को एक सही अर्थ में सर्वहारा की क्रांतिकारी पार्टी के रूप में स्थापित करने की बात करते हैं। लेनिन ने पश्चिमी यूरोप के देशों के दृढ़ कानूनवादी, संविधानवादी और बुर्जुआ–जनवादी पूर्वाग्रहों से खासतौर पर ग्रस्तता के कारण ट्रेड–यूनियनों में काम करने की मुश्किलों का हवाला दिया है, कमोबेश रूप में आज दुनिया के अधिकांश देशों में यही स्थिति है। दुनिया के अधिकतर देशों में इस समय मजदूरों का एक विशिष्ट स्तर पूंजीपतियों ने खड़ा किया है यह स्तर आर्थिक तौर पर अपेक्षाकृत खाता–पीता है और रहन–सहन आदतों तथा व्यवहार में पूंजीवादी है। यह सफेदपोश मजदूरों का हिस्सा पूंजीवाद में रच–बस गया है।

लेनिन ने अभिजात मजदूरों के इस हिस्से के पूंजीवादियों से मिल जाने से वर्ग–सम्बंधों में होने वाले परिवर्तन का जिक्र किया था तथा यह बताया था कि आर्थिक आधार में आये इस बदलाव ने आधुनिक पूंजीवाद की राजनीतिक संस्थाओं–प्रेस, संसद, कांग्रेसों आदि ने शिष्ट, विनीत, सुधारवादी और देश प्रेमी दफ़्तरी कर्मचारियों और मजदूरों के लिए आर्थिक विशेषाधिकारों और रिश्वतों के अनुरूप राजनीतिक विशेषाधिकारों और रिश्वतों को पैदा कर दिया है।

उन्होंने कहा:

''सरकार या युद्वोद्योग समिति, संसद और विभिन्न आयोगों में, सम्माननीय वैधा रूप से प्रकाशित समाचार पत्रों के सम्पादकीय विभागों या इतनी ही सम्माननीय और पूंजीवादी–विधिपालक ट्रेड यूनियन की प्रबंध परिषदों में लाभजनक और आसान काम–यह है वह प्रलोभन जिससे साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग पूंजीवादी मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों और समर्थकों को आकर्षित करता है।

राजनीतिक लोकतंत्र का कार्ययंत्र भी इसी दिशा में काम करता है। हमारे युग में चुनावों के बिना कुछ भी नहीं किया जा सकताऋ जनसाधारण के बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता, और छापेखानों और संसदीयता के इस युग में चापलूसी, झूठ, जालसाजी, फैशनेबुल और लोकप्रिय नारों की जादूगरी, और मजदूरों से–इसी बात की खातिर कि वे पूंजीपति वर्ग का तख्ता पलटने के लिए क्रांतिकारी संघर्ष से नाता तोड़ें– दुनिया भर के सुधारों और सुखों के वायदे करने की व्यापक शाखाओं वाली सुव्यवस्थित और सुसज्जित व्यवस्था के बिना जन साधारण को अनुगामी बना पाना असम्भव है।''

(लेनिन, ट्रेड यूनियनें, पृष्ठ **313** जोर मूल में)

समाजवादी समाज में ट्रेड यूनियनों की भूमिका

लेनिन ने **1921–22** में नयी आर्थिक नीति के अंतर्गत ट्रेड यूनियनों की भूमिका तथा कार्यभारों के बारे में थीसिसों का मसौदा तैयार किया था। इसकी कुछ मुख्य बातें निम्नलिखित है :

''2. सर्वहारा राज्य में राजकीय पूंजीवाद तथा ट्रेड यूनियनें

सर्वहारा राज्य अपना स्वरूप बदले बिना व्यापार की स्वतंत्रता तथा पूंजीवाद के विकास की अनुमति केवल कतिपय सीमाओं के अंदर इस शर्त पर दे सकता है कि राज्य, निजी व्यापार तथा निजी पूंजीवाद का नियमन करे (उसकी देख–रेख करे, उस पर नियंत्रण रखे तथा उनके रूपों, विधियों आदि का निर्धारण करे)। इस तरह के नियमन की सफलता केवल राजकीय

अधिकारियों पर ही नहीं, वरन् काफी हद तक सामान्यतया सर्वहारा वर्ग और व्यापक मेहनतकश जन समुदाय की परिपक्वता पर, उनके सांस्कृतिक स्तर, आदि पर निर्भर करती है। फलस्वरूप ट्रेड यूनियनों के सामने आगे से जो मुख्य कार्यभार होंगे, उनमें से एक यह है कि वे पूंजी के विरुद्व संघर्ष में सर्वहारा के वर्ग हितों की हर तरह रक्षा करें। यह कार्यभार खुले रूप से आगे पेश किया जाना चाहिए, ट्रेड यूनियनों की मशीनरी को तद्नुरूप पुनर्गठित, परिवर्तित या परिवर्द्वित किया जाना चाहिए और हड़ताल कोष, आदि गठित, या यों कहें, निर्मित किये जाने चाहिए।

"3. तथाकथित आर्थिक स्वावलंबन लेखा प्रणाली के आधार पर खड़े किये जा रहे राजकीय प्रतिष्ठान तथा ट्रेड–यूनियनें

राजकीय प्रतिष्ठानों का तथाकथित आर्थिक स्वावलंबन लेखा प्रणाली में रूपान्तरण अनिवार्यतः तथा अटूट रूप से नयी आर्थिक नीति से जुड़ा हुआ हैऋ निकट भविष्य में यह राजकीय प्रतिष्ठान का यदि एकमात्र नहीं, तो प्रभुत्वशाली रूप लाजिमी तौर पर बनेगा। वस्तुतः इसका अर्थ यह है कि मुक्त मण्डी के रहते, जिसे इस समय इजाजत दी गयी है तथा जो विकसित हो रही है, काफी हद तक राजकीय प्रतिष्ठान वाणिज्यिक तथा पूंजीवादी आधार पर स्थापित किये जायेंगे। श्रम की उत्पादनशीलता बढ़ाने तथा प्रत्येक राजकीय प्रतिष्ठान द्वारा अपना खर्चा खुद उठाने और मुनाफा कमाने की तात्कालिक आवश्यकता को देखते हुए तथा संकीर्ण विभागीय हितों तथा जरूरत से ज्यादा विभागीय जोश की अवश्यम्भावी वृद्वि को देखते हुए यह परिस्थिति मजदूर जनसाधारण तथा राजकीय प्रतिष्ठानों के डाइरेक्टरों और प्रबंधकों या इन प्रतिष्ठानों की देख–रेख करने वाले विभागों के बीच हितों में कुछ टकराव निश्चित रूप से पैदा करेगी। इसलिए जहां तक राजकीय प्रतिष्ठानों का सम्बंध है, ट्रेड यूनियनों का निस्संदेह कर्तव्य है कि वे काम पर रखने वालों के विरूद्व सर्वहारा वर्ग तथा मेहनतकश जनसाधारण के हितों की रक्षा करें।

"4.जो राज्य भूमि तथा कल कारखानों, आदि पर निजी स्वामित्व को मान्यता देता है। तथा जहां राजनीतिक सत्ता पूंजीपति वर्ग के हाथों में है वहां सर्वहारा के वर्ग–संघर्ष तथा उस राज्य में, जहां राज्य भूमि तथा बड़े प्रतिष्ठानों की बहुसंख्या पर निजी स्वामित्व को मान्यता नहीं देता तथा राजनीतिक सत्ता सर्वहारा के हाथों में है, सर्वहारा के वर्ग–संघर्ष के बीच मूल अंतर जब तक वर्ग विद्यमान रहेंगे, वर्ग–संघर्ष अवश्यम्भावी है। पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण की अवधि में वर्गों का अस्तित्व अवश्यम्भावी हैऋ रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम निश्चित रूप से यह कहता है कि हम पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण की ओर केवल पहले पग उठा रहे हैं। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत सरकार तथा ट्रेड यूनियनों को उद्योग और कृषि के बिजलीकरण के पूर्ण होने तक कम से कम मुख्य रूप से–तथा इस तरह छोटे उत्पादन तथा मंडी के प्रभुत्व को जड़ से खत्म किये जाने तक वर्ग–संघर्ष के अस्तित्व और उसकी अवश्यम्भाविता को स्पष्ट रूप से स्वीकार करना चाहिए। इसका अर्थ यह निकलता है कि इस समय हम हड़तालों का किसी भी सूरत में परित्याग नहीं कर सकते तथा हम हड़तालों की जगह अनिवार्य राजकीय मध्यस्थता को प्रतिस्थापित करने वाले कानून को सिद्वान्ततः सहमति नहीं दे सकते।

दूसरी ओर, यह स्पष्ट है कि पूंजीवाद के अंतर्गत हड़ताल आंदोलन का अंतिम ध्येय राजकीय यंत्र को तोड़ना तथा सम्बद्व वर्ग की राजकीय सत्ता को उलटना होता है। संक्रमणात्मक प्रकार के सर्वहारा राज्य में, जैसा कि हमारा है, हड़ताल आंदोलन का अंतिम ध्येय केवल यही हो सकता कि वह सर्वहारा राज्य में नौकरशाही विकृतियों, गलतियों तथा त्रुटियों के विरूद्व संघर्ष करके तथा पूंजीपतियों की, जो नियंत्रण आदि से बचने का यत्न करते हैं, वर्ग–क्षुधा पर अंकुश लगा करके सर्वहारा राज्य को तथा सर्वहारा वर्ग की राजकीय सत्ता को सुदृढ़ बनाये। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत सरकार तथा ट्रेड यूनियनें कभी यह नहीं भूल सकतीं और उन्हें मजदूरों तथा व्यापक मेहनतकश जन समुदाय से यह नहीं छुपाना चाहिए कि ऐसे राज्य में, जिसमें राजकीय सत्ता सर्वहारा के हाथों में है, एक ओर, सर्वहारा राज्य की नौकरशाही विकृतियां तथा सरकारी दफ़्तरों में पुरानी पूंजीवादी प्रणाली के सब तरह के अवशेष ही और दूसरी ओर, व्यापक मेहनतकश जनसमुदाय की राजनीतिक अपरिपक्वता तथा सांस्कृतिक पिछड़ापन ही हड़तालों का कारण हो सकते हैं तथा उन्हें उचित ठहराया जा सकता है।

"5. स्वैच्छिक ट्रेड यूनियन सदस्यता की ओर लौटना

तमाम मजदूरों को अनिवार्यतः ट्रेड–यूनियनों का सदस्य बनाया जाना न तो उद्योग में समाजीकरण के वास्तविक रूप में हासिल स्तर के अनुरूप रह गया है और न जन साधारण के विकास के स्तर के अनुरूप। इसके अतिरिक्त अनिवार्य सदस्य बनाये जाने से ट्रेड–यूनियनों में भी कुछ मात्रा में नौकरशाही विकृतियों का समावेश हो गया हैं। इसलिए ट्रेड यूनियनों की स्वैच्छिक सदस्यता की ओर दीर्घकाल के लिए दृढ़तापूर्वक लौटना आवश्यक है। ट्रेड यूनियन के सदस्यों से कोई विशिष्ट राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाने का तकाजा किसी भी सूरत में नहीं किया जाना चाहिएऋ

... ... सर्वहारा राज्य को कानूनी और भौतिक दोनों साधनों द्वारा मजदूरों को ट्रेड यूनियनों में संगठित होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिएऋ परन्तु ट्रेड यूनियनों को कर्तव्यों के बिना कोई अधिकार नहीं मिल सकते।

"7. सर्वहारा राज्य के आर्थिक तथा राजनीतिक निकायों में ट्रेड–यूनियनों की भूमिका तथा कार्य

... ... ऐसे देश में, जहां छोटे किसानों का जबर्दस्त बोलबाला है, सर्वहारा वर्ग इस कार्य को (पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण को –सं.) केवल तभी सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है, जब वह कृषक समुदाय की विशाल बहुसंख्या के साथ बहुत कुशलता पूर्वक, सावधानी के साथ, तथा धीरे–धीरे सहबंध स्थापित करेगा। ट्रेड यूनियनों को सरकार के साथ, जिसकी तमाम राजनीतिक व आर्थिक गतिविधियां मजदूर वर्ग के वर्ग–चेतन हरावल, कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा निदेशित होती हैं, घनिष्ठता पूर्वक तथा निरंतर सहयोग करना चाहिए। सामान्यतया कम्युनिज्म का विद्यालय होने के नाते ट्रेड यूनियनों को खास तौर पर पूरे मजदूर समुदाय को और अंततः पूरी मेहनतकश जनता को समाजवादी उद्योग का (और धीरे–धीरे कृषि का भी) प्रबंध करने की कला में प्रशिक्षित करने का विद्यालय होना चाहिए। ... ...

"8. जन–साधारण के साथ सम्पर्क–समस्त ट्रेड यूनियन कार्यकलाप की आधारभूत शर्त

जन–समुदाय के साथ, अर्थात मजदूरों की विशाल बहुसंख्या (और अंततः पूरी मेहनतकश जनता) के साथ सम्पर्क समस्त ट्रेड–यूनियन कार्यकलाप की सफलता की सबसे महत्वपूर्ण तथा सबसे आधारभूत शर्त है। नीचे से लेकर ऊपर तक तमाम ट्रेड यूनियन संगठनों और उनके कार्ययंत्र में ऐसे उत्तरदायी साथियों को–वे सब कम्युनिस्ट न हों– रखने की प्रणाली जारी की जानी चाहिए, तथा कई वर्षों के व्यवहार द्वारा परखी जानी चाहिए, जो ठीक मजदूरों के बीच रहें, उनके जीवन की एक–एक तफसील का अध्ययन करें तथा किसी भी प्रश्न पर तथा किसी भी समय जन साधारण की भावदशा, वास्तविक आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, विचारों को गलती किये बिना जांचने में सक्षम हों।.....संख्या की दृष्टि से छोटी कम्युनिस्ट पार्टी के सामने, जो मजदूर वर्ग के हरावल के रूप में (फिलहाल अधिक उन्नत देशों के प्रत्यक्ष समर्थन के बिना) समाजवाद में संक्रमण करने वाले एक विशाल देश का पथ–प्रदर्शन कर रही है, एक सबसे बड़ा तथा सबसे गम्भीर खतरा जन साधारण से अलगाव का है, इस बात का खतरा है कि हरावल दौड़ते हुए बहुत आगे पहुंच सकता है, और पांत को व्यवस्थित करने में विफल हो सकता है, श्रम की पूरी सेना के साथ, अर्थात मजदूरों और किसानों की विशाल बहुसंख्या के साथ दृढ़ सम्पर्क कायम रखने में विफल हो सकता है।..... यदि ट्रेड यूनियनें–कम्युनिस्ट पार्टी से जनता तक पहुंचने वाली ट्रांसमिशन बेल्टें– ठीक तरह से न बिठायी गयी हों या वे खराब काम करें, तो समाजवाद के निर्माण

का हमारा कार्य अवश्यम्भावी रूप से तबाही के मुंह में पहुंच जायेगा। इस तथ्य को समझाना, उस पर जोर देना तथा उसकी पुष्टि करना पर्याप्त नहीं हैऋ उसे ट्रेड यूनियनों के पूरे ढांचे और उनकी दैनंदिन गतिविधियों द्वारा संगठनात्मक सहारा दिया जाना चाहिए।

9. सर्वहारा के अधिनायकत्व के अंतर्गत ट्रेड–यूनियनों के दर्जे में विरोध

उपरोक्त तमाम बातों से स्पष्ट है कि ट्रेड यूनियनों के विविध कार्यों में नाना विरोध हैं। एक ओर, उनके कार्य करने की प्रमुख विधि समझाना–बुझाना तथा शिक्षा–दीक्षा हैऋ दूसरी ओर, राजकीय सत्ता में भागीदार होने के नाते वे जोर–जबरन में शिरकत से इंकार नहीं कर सकतीं। एक ओर, उनका मुख्य कार्य मेहनतकश जनसाधारण के हितों की सबसे प्रत्यक्ष तथा तात्कालिक अर्थ में रक्षा करना हैऋ दूसरी ओर, राजकीय सत्ता में भागीदार होने तथा समग्र रूप में अर्थव्यवस्था के निर्माता के रूप में वे दबाव का आश्रय लेने से इंकार नहीं कर सकतीं। एक ओर, उन्हें सैनिक ढंग से कार्य करना होगा, इसलिए कि सर्वहारा का अधिनायकत्व सबसे प्रचण्ड, सबसे अनमनीय, सबसे विषम वर्ग–युद्व हैऋ दूसरी ओर, कार्य की विशिष्ट रूप से सैनिक विधियां ट्रेड यूनियनों पर कतई लागू नहीं की जा सकती। एक ओर, उन्हें अपने को जन–साधारण के स्तर के अनुकूल ढालने में सक्षम होना चाहिएऋ दूसरी ओर, वे जन साधारण के पूर्वाग्रहों तथा पिछड़ेपन की कभी पैरवी न करें, अपितु जनसाधारण को निरंतर उच्च और उच्च स्तर पर पहुंचायें, आदि, आदि।

ये विरोध सांयोगिक नहीं हैं। और वे दशकों तक कायम रहेंगे। इसलिए कि पहले, ये विरोध किसी भी विद्यालय की विशिष्टता है। और ट्रेड–यूनियनें कम्युनिज्म का विद्यालय हैं। यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि मेहनतकश जनता की बहुसंख्या कई दशकों के गुजर चुकने से पहले ही विकास की उच्चतर मंजिल पर पहुंच जायेगी तथा वयस्कों के विद्यालय के सारे चिन्हों तथा अवशेषों का त्याग कर देगी। दूसरे, जब तक पूंजीवाद और छोटे उत्पादन के अवशेष कायम रहेंगे, उनके तथा समाजवाद के नन्हें अंकुरों के बीच विरोध पूरी सामाजिक प्रणाली के दौरान अवश्यम्भावी रहेंगे।

इससे दो व्यावहारिक निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए। पहला, ट्रेड–यूनियन गतिविधियों के सफल संचालन के हेतु उनके कार्यों को ठीक तरह समझना ही पर्याप्त नहीं हैऋ उन्हें ठीक तरह संगठित करना ही पर्याप्त नहीं है। इनके अतिरिक्त विशेष व्यवहार–कुशलता की, जन साधारण को कम से कम मनमुटाव के साथ उच्च सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मंजिल में पहुंचाने के हेतु इन जन साधारण के पास एक–एक निजी मामले में खास तरीके से पहुंचने की योग्यता की आवश्यकता होती है।

दूसरा, उपरोक्त विरोध झगड़ों, मतभेदों तथा मनमुटावों, आदि को अनिवार्यतः जन्म देंगे। इन्हें तुरन्त निपटाने के लिए एक उच्च निकाय की जरूरत है, जिसके पास पर्याप्त सत्ता हो। यह उच्च निकाय है कम्युनिस्ट पार्टी तथा तमाम देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों का अंतर्राष्ट्रीय संघ अर्थात कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल।

10. ट्रेड यूनियनें तथा विशेषज्ञ

... ... यदि हमारे सभी नेतृत्वकारी निकाय, अर्थात कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत सरकार तथा ट्रेड यूनियनें प्रत्येक विशेषज्ञ की, जो अपना कार्य निष्ठापूर्वक करता हो, उसे जानता तथा उससे प्यार करता हो–भले ही कम्युनिज्म के विचार उसके लिए पराये हों–अपने आंखों की पुतली की तरह रक्षा नहीं करेंगी, तो समाजवाद के निर्माण में किसी गम्भीर प्रगति की अपेक्षा करना व्यर्थ होगा। हम यह शायद जल्द हासिल न कर पायें, परन्तु हर सूरत में ऐसी स्थिति हासिल करनी होगी, जिसमें विशेषज्ञ–एक पृथक सामाजिक स्तर के रूप में, जो तब तक कायम रहेगा, जब तक हम कम्युनिस्ट समाज के विकास की सबसे ऊंची मंजिल पर नहीं पहुंच जाते–भौतिक तथा कानूनी दृष्टि से, मजदूरों और किसानों के साथ साहचर्यपूर्ण सहयोग के मामले में पूंजीवाद की तुलना में समाजवाद के अंतर्गत जीवन की बेहतर अवस्थाओं का उपभोग करे। उनका जीवन आत्मिक दृष्टि से भी बेहतर होना चाहिए, अर्थात उन्हें अपने कार्य से संतोष करना चाहिए और यह समझना चाहिए कि उनका कार्य सामाजिक दृष्टि से उपयोगी है तथा पूंजीपति वर्ग के घिनौने हितों से मुक्त है।...

ट्रेड–यूनियनों को परिलक्षित प्रकार के तमाम कार्यकलाप सम्बद्व विभाग के हितों के दृष्टिकोण से नहीं, वरन मेहनतकशों और समग्र अर्थव्यवस्था के हितों के दृष्टिकोण से संचालित करने चाहिए (अर्थात तमाम सम्बद्व सरकारी विभागों के क्रियाकलाप में विधिवत सहयोग करना चाहिए)। विशेषज्ञों के मामले में ट्रेड यूनियनों का यह परिश्रम साध्य कर्तव्य है कि वे व्यापक मेहनतकश जन समुदाय पर नित्यप्रति प्रभाव डालें ताकि उसके तथा विशेषज्ञों के बीच उपयुक्त सम्बंध स्थापित हो सकें। केवल ऐसे ही कार्यकलाप वस्तुतः महत्वपूर्ण फल दे सकते हैं।

11. ट्रेड–यूनियनें तथा मजदूर वर्ग पर निम्न पूंजीवादी प्रभाव

ट्रेड यूनियनें वस्तुतः तभी कारगर होती हैं, जब वे गैर पार्टी मजदूरों के बहुत व्यापक स्तरों को एकबद्व करती हैं। यह चीज निश्चित रूप से– खासतौर पर ऐसे देश में, जहां कृषक समुदाय का बहुत ज्यादा बोलबाला है विशिष्टतया ट्रेड यूनियनों में उन राजनीतिक प्रभावों को अपेक्षाकृत स्थिरता प्रदान करेगी, जो पूंजीवाद के अवशेषों और छोटे उत्पादन के ऊपर अधिसंरचना का काम करते हैं। ये निम्न–पूंजीवादी प्रभाव हैं, अर्थात एक ओर, समाजवादी–क्रांतिकारी और मेंशेविक (दूसरे तथा ढाइवें इण्टरनेशनल की पार्टियों के रूसी रूप) तथा दूसरी ओर, अराजकतावादी। केवल इन प्रवृत्तियों के बीच ऐसे लोग काफी तादाद में बाकी हैं, जो स्वार्थपूर्ण वर्ग–उद्देश्यों की दृष्टि से नहीं, वरन् विचारधारा की दृष्टि से पूंजीवाद की पैरवी करते हैं ओर सामान्य रूप से 'जनवाद, समानता और मुक्ति के, जिनकी वे वकालत करते हैं, गैर वर्गीय स्वरूप पर विश्वास करते जाते हैं।

हमें इस सामाजिक–आर्थिक कारण को – अलग–अलग समूहों की भूमिका को नहीं, अलग–अलग व्यक्तियों की तो बात ही क्या – अपने देश में ट्रेड यूनियनों के बीच ऐसे निम्न पूंजीवादी विचारों के अवशेषों (और कभी–कभी पुनर्जन्म) के लिए उत्तरदायी मानना चाहिए। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक गतिविधियां संचालित करने वाले सोवियत निकायों और ट्रेड यूनियनों के तमाम कम्युनिस्ट सदस्यों को ट्रेड यूनियनों में निम्न पूंजीवादी प्रभावों, प्रवृतियों तथा भटकावों के विरुद्व विचारधारात्मक संघर्ष की ओर कहीं अधिक ध्यान देना चाहिए, खासतौर पर इसलिए कि नयी आर्थिक नीति के फलस्वरूप पूंजीवाद का कुछ दृढ़ होना अवश्यम्भावी है। मजदूर वर्ग पर निम्न–पूंजीवादी प्रभावों के विरुद्व संघर्ष को तेज कर इसका मुकाबला करने की तात्कालिक आवश्यकता है। (लेनिन, ट्रेड यूनियनें पृष्ठ **516–26** प्र.प्र.मास्को)

लेनिन ने उपरोक्त थीसिसें नयी आर्थिक नीति के दौरान लिखी थीं। नयी आर्थिक नीति के समाप्त हो जाने के बाद भी समाजवाद के दौर में सोवियत संघ में ट्रेड यूनियनों की भूमिका लगातार मजबूत हुई थी।

सोवियत संघ में जब समाजवाद था, ट्रेड यूनियनें अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। द्वितीय विश्व युद्व के ठीक पहले इनकी सदस्यता दो करोड़ साठ लाख के आस–पास थी। यह समूची मजदूर आबादी का **85** प्रतिशत थी। वे सोवियत जीवन का मुख्याधार थीं।

सोवियत राजनीतिक व्यवस्था अवाम के व्यापक जनवादी जन संगठनों पर निर्भर करती थी। इन जनसंगठनों को आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक सांस्कृतिक इत्यादि, सभी उद्देश्य के लिए गठित किया गया था। ट्रेड यूनियनें मजदूर वर्ग के बुनियादी संगठन के बतौर

थीं। उनका मुख्य कार्यभार मजदूरी, काम की स्थितियां, उत्पादन, श्रम सुरक्षा, सामाजिक बीमा, सांस्कृतिक मामले, आवास इत्यादि सहित मजदूरों के तात्कालिक कल्याण को प्रभावित करने वाले सभी सवालों के सरोकार थे। वे उद्योगों के विकास के बुनियादी कारक थे। वे सोवियत संघ के आम हितों को प्रभावित करने वाले अन्य सभी मसलों पर भी अहम भूमिका निभाते थे। सोवियत सरकार द्वारा लिए गये कोई भी नीति सम्बंधी सवाल ट्रेड यूनियनों के साथ सलाह–मशविरे के बगैर नहीं लिये जाते थे। समाजवादी सोवियत संघ में ट्रेड यूनियनों का जितना प्रभाव था, दुनिया के किसी भी पूंजीवादी देश में नहीं था।

अक्सर यह कहा जाता है कि समाजवादी सोवियत संघ में ट्रेड यूनियनें स्वतंत्र नहीं थीं। लेकिन ट्रेड यूनियनों की स्वतंत्रता का क्या अर्थ है? सभी पूंजीवादी देशों में ट्रेड यूनियनों की स्वतंत्रता से तुलना करके देखा जाय तो समाजवादी सोवियत संघ में ट्रेड यूनियनों की स्वतंत्रता को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। पूंजीवादी देशों में ट्रेड यूनियनों को पूंजीपतियों द्वारा नियंत्रित सरकारों, दुश्मनी पूर्ण नियोक्ता संगठनों, प्रतिक्रियावादी अखबारों और कदम दर कदम पर अवरोध खड़ा करने वाले कानूनों का सामना करना पड़ता है जो बामुश्किल सांस लेने की जगह देते हैं। इन देशों में ट्रेड यूनियनों को वर्ग–दुश्मनों के हमलों के खतरे के साये में हमेशा रहना होता है। उनको हमेशा गैर–कानूनी स्थिति में धकेले जाने या वस्तुतः उनका सफाया कर देने के खतरे के बीच काम करना पड़ता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कई सालों के कठिन संघर्षों के दौरान उन्होंने औपचारिक मान्यता प्राप्त कर ली है।

समाजवादी सोवियत संघ में ठीक इसके विपरीत होता था। वहां ट्रेड यूनियनें बिल्कुल स्वतंत्र स्थिति में थीं। वहां हमला करने के लिए खुले तौर पर कोई वर्ग दुश्मन नहीं था। मजदूर वर्ग और उसके सहयोगी सरकार पर पूरा नियंत्रण रखते थे। समाजवादी सोवियत संघ की सर्वोच्च परिषद में ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि भारी बहुमत में होते थे। सभी औद्योगिक केन्द्रों की सोवियतों में मजदूर बहुमत में होते थे। देहाती क्षेत्रों में सामूहिक किसान सोवियतों में बहुमत में थे। कम्युनिस्ट पार्टी के सर्वोच्च निकाय में अनेक ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि होते थे। समाजवादी सोवियत संघ के प्रेस और रेडियो ट्रेड यूनियनों के पक्षधर थे।

सोवियत मजदूर संगठन जहां अत्यधिक स्वतंत्र थे, वहीं वे कम्युनिस्ट पार्टी, समाजवादी सोवियत सरकार, सामूहिक किसानों, औद्योगिक संगठनों, प्रेस, रेडियो, इत्यादि के साथ घनिष्ठता से जुड़कर काम करते थे। वे जनता के विशाल सामाजिक ताने–बाने के अभिन्न अंग थे। वे समाजवाद के लिए इन सभी वफे साथ एकताबद्व होकर राष्ट्रीय योजना की दुनिया की सबसे अग्रणी प्रणाली के अंतर्गत काम करते थे।

1936 के समाजवादी सोवियत संघ के संविधान की **126वीं** धारा में कहा गया है :

> मेहनतकश अवाम के हितों के अनुरूप और व्यापक जन–समुदाय की सांगठनिक पहल व राजनीतिक गतिविधि को विकसित करने के लिए सोवियत समाजवादी संघीय गणतंत्र के नागरिकों को सार्वजनिक संगठनों–ट्रेड यूनियनों, सहकारी संघों, युवा संगठनों, खेल व प्रतिरक्षा संगठनों, सांस्कृतिक, तकनीकी व वैज्ञानिक समितियों–में संगठित होने के अधिकार को सुनिश्चित किया जाता है।''

समाजवादी सोवियत संघ के जीवन में संगठित होने का अधिकार एक बुनियादी लक्षण था। इसके अलावा, सोवियत ट्रेड यूनियनें सोवियत सरकार से स्वतंत्र थीं। ट्रेड यूनियनों का सोवियत राज्य के साथ सम्बंधों का सवाल **1920–21** में लेनिन और त्रात्स्की के बीच हुई तीखी बहसों के बाद तय हो गया था। लेनिन ट्रेड यूनियनों की स्वतंत्र भूमिका के पक्षधर थे जबकि त्रात्स्की ट्रेड यूनियनों को सोवियत राज्य का अंग बनाना चाहते थे। इस बहस में त्रात्स्की की पराजय हुई और लेनिन की राय मानी गयी। यही समाजवादी सोवियत संघ की नीति बनी रही। कम्युनिस्ट पार्टी के साथ ट्रेड यूनियनों के सम्बंध के बारे में बोल्शेविक पार्टी के विरोधी ब्रिटिश फेबियन समाजवादी बीट्रिस और सिडनी वेब ने लिखा थाः

> यदि पार्टी व्यक्तियों या सार्वजनिक अधिकारियों को किसी नीति पर प्रभावित करती है या उन्हें निदेशित करती है तो वह सिर्फ समझा–बुझाकर करती है। यदि यह ताकत का प्रयोग करती है तो यह अपने सदस्यों के विवेक को जगाने के द्वारा, और जनमत द्वारा उनके चुने जाने के जरिए करती है। (बीट्रिस और सिडनी वेब, सोवियत कम्युनिज्म, एक नयी सभ्यता, पृष्ठ **340,1936)** विलियम जेड फोस्टर की पुस्तक 'अमेरिकन ट्रेड यूनियनिज्म' से उद्धृत)

समाजवादी सोवियत संघ में सामूहिक सौदेबाजी ऑल यूनियन सेण्ट्रल कौंसिल ऑफ ट्रेड यूनियन्स और राज्य आर्थिक अधिकारियों के नेतृत्व व जन कमिसार परिषद के बीच बुनियादी मजदूरी समझौतों के जरिए की जाती थी। यह सब राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजना और इसके अंश के तौर पर एक वर्षीय योजनाओं को तय करने के आम कार्यभार के हिस्से के बतौर होता था। समूचे मजदूर वर्ग की मजदूरी के लिए कुल राशि निर्धारित करने में, सरकार के प्रशासनिक खर्चे, राष्ट्रीय सुरक्षा, उद्योग के विस्तार, शिक्षा, सामाजिक बीमा और अन्य आवश्यक खर्चों के मद का ध्यान रखा जाता था। इस तरह तय किये गये योजना मसौदे को जनसमुदाय के बीच बहस के लिए ले जाया जाता था और तमाम सुझाव आने के बाद पुनर्विचार करके आवश्यक परिवर्तन किये जाते थे।

बुनियादी मजदूरी दर तय होने के बाद आमतौर पर व अलग–अलग उद्योगों में यूनियनें अपनी राष्ट्रीय व स्थानीय कमेटियों के जरिये विभिन्न उद्योगों और फैक्टरियों के प्रतिनिधियों के साथ समझौता वार्तायें करती थीं, जिससे कि उनकी विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप मजदूरी व अन्य हालात विस्तृत रूप से तय किया जा सके।

ब्रिटिश ट्रेड यूनियनों के विशेषज्ञ व फेबियन समाजवादी बीट्रिस व सिडनी वेब ने इसका जिक्र करते हुए लिखा थाः

> ''किसी विदेशी पर्यवेक्षक को यह देखकर हैरानी होती है कि काम के स्थान पर संरक्षा और सुविधा, अस्पताल और सैनीटोरियम बिस्तरे, दुर्घटनाओं को रोकने के लिए उठाये गये कदम, काम पर लगे लोगों के लिए अतिरिक्त व बेहतर रहने के बंदोबस्त, छोटे बच्चों के लिए क्रेच और किंडरगार्डन, कामगारों के क्लबघर और उनको अपनी योग्यता को बढ़ाने में समर्थ होने के लिए उपलब्ध तकनीकी कक्षायें–और कामगारों के दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण बहुत सारे अन्य मसलों को प्रबंध और विभिन्न कामगार कमेटियों के बीच हर साल मार्च में सालाना विस्तृत समझौते के तहत तय किया जाता है।'' (ब्रीट्रिस एवं सिडनी वेब, वही, पृ–**188** उद्धृात उसी पुस्तक से)

ये सभी ट्रेड–यूनियन समझौते–राष्ट्रीय, औद्योगिक, स्थानीय मजदूरों के बीच अत्यधिक सघन बहस–मुबाहिसे के विषय होते थे। इस बहस–मुबाहिसे के बाद ही उन्हें लागू किया जाता था।

समाजवादी सोवियत संघ में कभी–कभार मजदूरी सम्बंधी विवाद खड़े होते थे। ऐसे विवादों को संयुक्त विवाद समितियों के द्वारा सुलह और मध्यस्थता के जरिए, और जन–न्यायालयों में मजदूर सत्र में हल किया जाता था। ये संस्थायें अन्य सोवियत संस्थाओं की तरह समाजवादी भावना में काम करती थीं जिसमें उस समय की परिस्थितियों में यथा सम्भव मजदूर के हितों को आगे बढ़ाने पर ध्यान रखा जाता था।

समाजवादी सोवियत संघ में हड़तालों पर प्रतिबंध नहीं था। लेकिन शायद ही ये कभी होती थीं। यह स्वाभाविक ही लगता है कि जब मजदूर खुद ही शासक महसूस करते हों और उनका जीवन स्तर लगातार ऊपर उठ रहा हो तो वे हड़ताल पर क्यों जाते।

समाजवादी सोवियत संघ में उत्पादन में ट्रेड–यूनियनों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। प्रत्येक स्थानीय व राष्ट्रीय यूनियन में और समग्र ट्रेड यूनियन आंदोलन में उत्पादन के विशेष विभाग होते थे। ऑल यूनियन सेण्ट्रल कौंसिल ऑफ ट्रेड यूनियन्स **(AUCCTU)** और सोवियत सरकार का आर्थिक तंत्र उत्पादन के प्रत्येक चरण में घनिष्ठता के साथ मिलकर काम करते थे।

यही एक बुनियादी महत्व का कारण है कि समाजवादी सोवियत संघ में **1929** से **1940** के बीच औद्योगिक उत्पादन **5** गुना से अधिक बढ़ गया था। जबकि पूंजीवादी विश्व आर्थिक महामंदी के दुष्चक्र में फंसा हुआ था। व्यापक मजदूर वर्ग की उत्साहपूर्ण भागीदारी के बगैर यह सम्भव नहीं हो सकता था।

सोवियत संघ के **1936** के संविधान में यह घोषित किया गया था कि सोवियत समाजवादी गण संघ में प्रत्येक काम करने योग्य नागरिक के लिए कार्य एक कर्तव्य है और सम्मान की बात है, जो इस सिद्वान्त के अनुसार है जो काम नहीं करेगा, वह खायेगा भी नहीं। समाजवादी सोवियत संघ में समाजवाद का यह सिद्वान्त लागू था, प्रत्येक अपनी योग्यतानुसार कार्य करेगा, अपने कार्य के अनुसार पायेगा।''

समाजवादी सोवियत संघ में उत्पादन को प्रोत्साहन देने के एक उदाहरण के रूप में स्ताखानोववादी आंदोलन सामने आया था। इसको खुद मजदूर वर्ग की आम कतारों ने विकसित किया था। जिसमें वे खुद उत्पादन के ज्यादा दक्ष तरीके ईजाद करते थे। बेहतर और अधिक उत्पादन के लिए मजदूरों के बीच समाजवादी प्रतिस्पर्धा, संयंत्र और उद्योगों में उत्पादन बढ़ाने वाले सबसे अच्छे मजदूरों के शॉक ब्रिगेड, लागत का हिसाब रखने वाले ब्रिगेड, जिनका काम उत्पादन लागत कम करने के तरीके निकालना होता था॰ फैक्टरियों में मजदूरों के न्यायालय जो अच्छा काम करने वालों की तारीफ करते थे और लापरवाही बरतने वाले मजदूरों को झिड़कते थे। श्रम के नायकों को सोवियत आर्डर से नवाजा जाता था। ये सभी तरीके ट्रेड यूनियनों ने अपनाये थे और इनके जरिए वे औद्योगिक समस्यायें हल करते थे।

मजदूरी और उत्पादन गतिविधियों के अलावा समाजवादी सोवियत संघ में ट्रेड यूनियनें और तीन बड़े क्षेत्रों में अपनी जनगतिविधियां करती थीं। ये क्षेत्र थे सामाजिक बीमा, श्रम सुरक्षा और सांस्कृतिक कार्य।

सामाजिक बीमा के क्षेत्र में समाजवादी सरकार सालाना भारी मात्रा में पैसा खर्च करती थी। अपने जीवन के सभी मुकामों में मजदूर प्रत्येक सम्भव जोखिम से– बीमारी, बुढ़ापा, दुर्घटना, स्थायी अपंगता, मातृत्व, मृत्यु इत्यादि से–वित्तीय तौर पर सुरक्षित थे। बीमा से फायदे मजदूर की नियमित मजदूरी के आधे से लेकर बराबर तक होते थे। समाजवादी सोवियत संघ में चूंकि कोई बेरोजगार नहीं थी, इसलिए बेरोजगारी का जोखिम भी नहीं था। सामाजिक बीमा प्रणाली की जिम्मेदारी **1933** से सीधे ट्रेड यूनियनों के ऊपर थी। ए.यू.सी.सी. टी.यू.आमतौर पर बीमा फण्ड का प्रबंधन करती थी। प्रत्येक फैक्टरी के अंदर मजदूरों की प्रत्यक्ष मतों से चुनी गयी एक व्यापक सामाजिक बीमा परिषद होती थी। ये सामाजिक बीमा परिषदें प्रत्येक मामले में मुआवजे की रकम तय करती थीं।

श्रम सुरक्षा के क्षेत्र में भी समाजवादी सोवियत संघ की ट्रेड यूनियनें व्यापक शक्ति रखती थीं। वे सोवियत समाजवादी गण संघ के समूचे श्रम कानूनों को लागू कराने का अधिकार रखती थीं और यह उनका कर्तव्य भी था। इन कानूनों में सात और छः घण्टे काम के दिन की गारण्टी, ओवरटाइम के लिए डेढ़ गुना व दुगुना भुगतान, ट्रेड यूनियन संगठनों को पूरे अधिकार तथा सामूहिक सौदेबाजी का अधिकार, महिलाओं तथा युवा मजदूरों की पूर्ण सुरक्षा,स्वास्थ्य और संरक्षा के समग्र कदम, सभी मजदूरों को भुगतान युक्त छुट्टी का प्रावधान इत्यादि शामिल थे। **1934** में समाजवादी सोवियत सरकार ने राष्ट्रीय श्रम विभाग को समाप्त कर दिया था और इसके कार्यों को ए.यू.सी.सी.टी.यू. को सौंप दिया था। सोवियत ट्रेड यूनियनों को उद्योगों में मजदूरों के अधिकारों और उनके कल्याण की हिफाजत करने के साथ ही ऐसे नियम बनाने का अधिकार था, जो कानून की बाध्यकारी शक्ति रखते थे, और जिनके लापरवाह व्यतिक्रमण पर या नौकरशाहना फैक्टरी प्रबंधकों को दण्डित किया जा सकता था। देश के व्यापक श्रम सुरक्षा सेवा पर निगरानी रखने के लिए ट्रेड यूनियन आंदोलन के पास फैक्टरी निरीक्षकों की अपनी व्यवस्था थी। संयत्र, खदान, कार्यालय या रेल प्रणाली में समस्याओं को देखने के लिए प्रत्येक फैक्टरी परिषद के पास एक आयोग होता था।

शिक्षा (मानसिक और शारीरिक) और आम संस्कृति के विस्तृत क्षेत्र में समाजवादी सोवियत संघ की ट्रेड यूनियनें व्यापक गतिविधियां करती थीं और ये उनकी विशिष्ट जिम्मेदारियां थीं। इसमें सोवियत लोगों को शिक्षित करने का विशाल कार्यभार शामिल था। जैसा कि सोवियत संघ के ए.यू.सी.सी.टी.यू.के महासचिव श्वेरनिक ने कहा था कि समाजवादी सोवियत गण संघ के मजदूर वर्ग के सांस्कृतिक व तकनीकी स्तर को उठाकर इंजीनियर के स्तर तक पहुंचाने का ऐतिहासिक कार्यभार उनके सामने है। मोलोतोव ने **1939** में तीसरी पंच वर्षीय योजना के शुरुआत में कहा था, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हमारी संस्थाओं में छात्रों की संख्या जर्मनी, इंग्लैण्ड, नंस, इटली और जापान की कुल छात्र संख्या से ज्यादा है।''

समाजवादी संस्कृति को आगे बढ़ाने में ट्रेड यूनियनें गहराई से जुड़ी हुई थी। उनके प्रतिनिधि राज्य में, स्वैच्छिक शिक्षा आंदोलनों में और सभी किस्म की संस्थाओं में निर्णायक भूमिकायें निभाते थे। ट्रेड यूनियनें स्वास्थ्य व शिक्षा विभागों के साथ घनिष्ठ सहयोगपूर्वक काम कर रही थीं।

ऐसी गतिविधियों के अतिरिक्त **800** के लगभग ट्रेड यूनियन सैनीटोरियम और आराम घर थे। बहुत सारे बालगृह, मजदूरों के क्लब,चलायमान सिनेमाघर, नृत्य, कला व साहित्य के घेरे, शारीरिक संस्कृति ग्रुप, संगठित भ्रमणकर्ता ग्रुप इत्यादि में ट्रेड यूनियनें लगी हुई थीं। इन सबसे सोवियत ट्रेड यूनियनों द्वारा किये गये व्यापक सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यों की एक मोटी झलक मिलती है।

ए.आई.सी.सी.टी.यू.ने इन सभी गतिविधियों को संचालित करने तथा मजदूर आंदोलन को इन सभी सवालों पर राष्ट्रीय नेतृत्व प्रदान करने के लिए अत्यन्त विशेषीकृत विभाग बना रखे थे, यथा सैनीटोरियम तथा स्वास्थ्य रिजॉर्ट विभाग, पर्यटन विभाग, खेल ब्यूरो, इंजीनियर और तकनीकी मजदूर ब्यूरो, सर्वहारा छात्र ब्यूरो, ट्रेड यूनियन एकेडमी, वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, ट्रेड यूनियन आंदोलन इत्यादि। संक्षेप में, जहां कहीं भी, मजदूरों के हित और कल्याण को बढ़ावा देना हो–मजदूरी के मानक, सामाजिक सुरक्षा, काम के हालात, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य में–समाजवादी सोवियत संघ की ट्रेड यूनियनें अनथक रूप से सक्रिय थीं और व्यापक प्रभाव रखती थीं।

समाजवादी सोवियत संघ में सर्वहारा तानाशाही के बावजूद वर्ग, वर्ग अंतर्विरोध और वर्ग–संघर्ष मौजूद थे। उत्पादन के साधनों के सामाजिक मालिकाने के बावजूद माल व्यवस्था मौजूद थी। काम के अनुसार भुगतान की प्रणाली थी। विनिमय मुद्रा के जरिये होता था। यह सब समाजवाद के दौरान अवश्यम्भावी था। मजदूरों और सामूहिक किसानो, शहर और गांव तथा मानसिक व शारीरिक श्रम के बीच अंतर मौजूद था। पूंजीवादी अधिकार मौजूद थे। और समाजवादी राज्य उनको संरक्षण दे रहा था। ये सब समाजवाद के अंतर्गत वर्ग–अंतर्विरोधों को जन्म देते हैं। समाजवाद में वर्गों का बना रहना लाजिमी है। सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के राज्य के अंतर्गत इनके दायरे को सीमित किया जा सकता है लेकिन इनको पूर्णरूपेण समाप्त कम्युनिज्म के अंतर्गत ही किया जा सकता है। सोवियत संघ में समाजवाद या दूसरे शब्दों में सर्वहारा वर्ग की तानाशाही जब तक कायम थी तब तक मजदूर वर्ग द्वितीय विश्वयुद्ध के अभूतपूर्व कालखण्ड के बावजूद पूंजीवादी दुनिया से बेहतर हालत में था। मजदूरों ने अकूत बलिदान देकर समाजवादी सोवियत संघ की रक्षा की थी। इस पूरे काल में ट्रेड यूनियनों ने मजदूर वर्ग की पार्टी और राज्य के नेतृत्व में उल्लेखनीय काम किये थे। **1956** में सोवियत संघ में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के साथ मजदूर वर्ग के सामने नयी चुनौतियां पेश हो गईं।

समाजवाद के अंतर्गत पूंजीवादी अधिकार बने रहते हैं। वे पूंजीवाद के पैदा होने के महत्वपूर्ण आर्थिक आधार का काम करते हैं। वे संशोधनवाद और नये पूंजीवादी तत्वों के पैदा होने के भी आर्थिक आधार का काम करते हैं। इससे मजदूर वर्ग, पार्टी सदस्यों और राज्य के अधिकारियों तथा अन्य अंगों के बीच नये पूंजीवादी तत्व पैदा होते रहते हैं। उनकी कोशिश होती है कि पूंजीवादी अधिकारों के दायरे को विस्तृत करें। इसी के साथ ही, सत्ताच्युत पुराने वर्गों के प्रतिनिधि पूंजीवादी अधिकारों को इस्तेमाल करके व षड्यंत्र रचकर सर्वहारा अधिनायकत्व के राज्य को खत्म करने के प्रयास में लगे रहते हैं। इस प्रकार, पूंजीवादी अधिकारों को सीमित करने या न सीमित करने के बीच संघर्ष सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के राज्य के अंतर्गत चलता रहता है। यही संघर्ष 'समाजवादी रास्ते' और 'पूंजीवादी रास्ते' के रूप में सामने आता है।

चूंकि पूंजीवादी अधिकारों और यहां तक कि बाजार, माल व्यवस्था, मूल्य का नियम आदि को समाजवाद के अंतर्गत दीर्घकाल तक समाप्त नहीं किया जा सकता इसलिए सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के अंतर्गत पूंजीवादी अधिकारों को सीमित करने व पूंजीवाद को प्रभावी न होने देने का संघर्ष अत्यंत कठिन और पेचीदा होता है।

बुर्जुआ अधिकार इन समाजवादी सिद्वान्तों कि जो काम नहीं करता, वह खायेगा भी नहीं और प्रत्येक उसकी योग्यता के अनुसार कार्य करेगा और काम के अनुसार पायेगा में व्यक्त और लागू होते हैं अलग–अलग मजदूर की काम करने की योग्यता व क्षमता भिन्न–भिन्न होती है, उनके सांस्कृतिक व तकनीकी स्तर में भिन्नता होती है और अलग–अलग मजदूरों पर निर्भर परिवार बड़ा या छोटा होता है, तो वास्तविकता में यह असमानता को जन्म देता है। इस प्रकार काम के अनुसार भुगतान से वास्तव में अभी भी पूंजीवादी अधिकार बना रहता है। इसको मजदूरी में जब लागू किया जाता है तो यह लोगों को अलग–अलग स्तरों पर विभाजित करता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग प्रसिद्वि, उच्चतर दर्जा और बेहतर जीवन की ओर अवश्यम्भावी तौर पर दौड़ने लगते हैं। यह कम्युनिस्ट श्रम की भावना के विरुद्व जाता है।

यदि यह जारी रहे तो ज्यादा पाने वाले और कम पाने वाले के बीच अंतर क्रमशः बढ़ता जाता है। कुछ लोग पैसा को पूंजी में तब्दील करके जमाखोरी, सूदखोरी और अन्य पेशों में लग जाते हैं।

इसी प्रकार माल प्रणाली में भी पूंजीवादी अधिकारों के दायरे को सीमित करना होता है। मुनाफे को कमान में रखने की प्रवृत्ति तरह–तरह की पूंजीवादी विकृतियों को जन्म देती है।

समाजवादी सोवियत संघ में पूंजीवादी अधिकारों व माल अर्थव्यवस्था को सीमित करने की ओर क्रमशः आगे बढ़ने तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को जीवन के हर क्षेत्र में लागू करने पर पर्याप्त जोर नहीं दिया गया। इस बात को नहीं स्वीकार किया गया कि समाजवाद के अंतर्गत वर्ग, वर्ग संघर्ष बने रहते हैं व पूंजीवादी अधिकार के कारण अवश्यम्भावी रूप से पूंजीवादी तत्व पैदा होते रहते हैं और विकसित होते हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि समाजवादी समाज के भीतर ही पूंजीवादी तत्व पैदा व विकसित हुए और संशोधनवाद तथा पूंजीवादी पुनर्स्थापना का आर्थिक आधार तैयार हो गया। कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर, सोवियत समाजवादी राज्य के भीतर और ट्रेड यूनियनों के भीतर ऐसे पूंजीवादी तत्व विकसित हो चुके थे। लेनिन ने समाजवादी राज्य के शुरुआती दिनों में ट्रेड यूनियनों के भीतर जिन नौकरशाही प्रवृत्तियों का जिक्र किया था, वे अब नये रूप में विकसित हो गयी थीं।

इसी के साथ ही उत्पादक शक्तियों के विकास पर एक तरफा जोर देने और उत्पादन सम्बंधों में सतत क्रांतिकारी रूपांतरण की प्रक्रिया को न अपनाने तथा मूलाधार और अधिरचना के सम्बंधों को ठीक ढंग से न हल करने के कारण पूंजीवादी पुनर्स्थापना का आधार सोवियत संघ में समाजवाद के दौर में तैयार हो गया था।

इसका समाहार करके और चीन में समाजवाद के दौर के अंतरविरोधों को हल करने के लिए माओ त्से तुंग ने चीन में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात किया था जिसने सर्वहारा तानाशाही को कायम रखने के लिए अमूल्य सिद्वान्त प्रस्तुत किये। इनकी आगे चर्चा की जायेगी। संक्षेप में ट्रेड यूनियनों की सर्वहारा क्रांति और समाजवाद के दौर में रूस के ये ही अनुभव थे। ये सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही अनुभव आज हमारे लिए कई महत्वपूर्ण सबक प्रस्तुत करते हैं। फिलवक्त, हमारे देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को रूस में पार्टी के गठन व निर्माण, मजदूर वर्ग की व्यापक आबादी को गोलबंद करने के तौर–तरीकों से बहुत–बहुत सीखने की जरूरत है।

.....